RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 1 अंक 8 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

liverajsamand.com

हिन्दी मासिक पत्रिका अप्रैल 2018

पेज संख्या : 36 राजसमंद

राजसमंद स्थापना दिवस विशेष

ई-मित्र
e-mitra
SBI ग्राहक सेवा केंद्र
आधार कार्ड (नए व पुराने में संशोधन), पासपोर्ट, पेन कार्ड व ऑनलाइन सेवाएं
9782106975
Vikrant Paliwal
vikrantpaliwal@gmail.com
RS-CIT
Digital India Power To Empower
● ITZ Cash ● IRCTC (Rail//Air Ticket) ● Pan Card/Passport
DIVYAM ONLINE SERVICES
पालीवाल मार्केट, कांकरोली, जिला राजसमंद (राज.)

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

प्रवेश प्रारम्भ
1 जून 2018 से नवीन सत्र हेतु पुनः अतिरिक्त एवं निःशुल्क शिक्षण
प्रवेश प्रारम्भ
विज्ञान वर्ग
भौतिक विज्ञान
रसायन विज्ञान
गणित, जीव विज्ञान
वाणिज्य वर्ग
लेखाशास्त्र
व्यवसाय अध्ययन
अर्थशास्त्र, कम्प्यूटर विज्ञान
पूर्ण अंग्रेजी माध्यम
संगीता किड्ज प्लानेट
कला वर्ग
भूगोल, राजनीति विज्ञान
इतिहास, संस्कृत, हिन्दी साहित्य
कम्प्यूटर विज्ञान
कक्षा - 10
गणित, विज्ञान,
अंग्रेजी, सामाजिक,
संस्कृत, हिन्दी
विशेष :- कक्षा 11वीं, 12वीं के लिए विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग में सभी विषयों के साथ कम्प्यूटर साइंस एवं वैकल्पिक गणित भी उपलब्ध।
प्ले ग्रुप से बाहरवीं तक (हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम)
संगीता सी. सैकेण्डरी स्कूल, कांकरोली
SANGEETA SR. SEC. GRACIOUS VISION, KANKROLI
स्वास्तिक सिनेमा के पास, स्टेशन रोड़, कांकरोली
9414174681, 9166579594
संगीता सीनियर सैकेण्डरी स्कूल
केलवा
पवन मोटर्स के पीछे, बस स्टैंड, केलवा जिला-राजसमंद
9414174681, 9166579594, 02952-278170

सुभाष पब्लिक सीनियर सेकण्डरी स्कूल, धोइन्दा
राजसमन्द जिले में श्रेष्ठतम विद्यालय की ओर अग्रसर
* विद्यालय के गौरव *
सत्र 2011-12 दसवीं बोर्ड जिला मेरिट में 10वां स्थान
प्रदीप कुमावत 86.33%
सत्र 2012-13 दसवीं बोर्ड जिला मेरिट में तृतीय स्थान
रवि कुमावत 92.33%
सत्र 2013-14 दसवीं बोर्ड राज्य स्तरीय मेरिट में 12वां व जिला मेरिट में 2 स्थान
देवेन्द्र गायरी 95.67%
सत्र 2014-15 12वीं विज्ञान बोर्ड जिला मेरिट में 12वां स्थान
काजल कुमावत 90.20%
सत्र 2014-15 मा.शि. बोर्ड 10वीं कक्षा जिला मेरिट में 10वां स्थान
अजयपाल सिंह राणा 94.17%
सत्र 2015-16 मा.शि. बोर्ड 12वीं कक्षा विज्ञान वर्ग में जिला मेरिट में 10वां स्थान
भुरालाल कुमावत 88.04%
सत्र 2015-16 मा.शि. बोर्ड 10वीं कक्षा जिला मेरिट में 16वां स्थान
भरत कुमावत 92.83%
सत्र 2015-16 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं
नाजिस डायर 92.00%
सत्र 2016-17 12वीं बोर्ड विज्ञान वर्ग की गौरवशाली प्रतिभाएं
घनश्याम कुमावत 90.40%
सत्र 2016-17 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं
दिव्या कुमावत 96.33%
सत्र 2016-17 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं
प्रिन्स दवे 92.67%
हिन्दी माध्यम नर्सरी से 12वीं तक (कला, वाणिज्य विज्ञान विषय)
प्रवेश प्रारम्भ
अंग्रेजी माध्यम नर्सरी से 12वीं तक (वाणिज्य, विज्ञान विषय)
जिले में श्रेष्ठ परिणाम व शिक्षा के साथ संस्कार देने वाला विद्यालय
सर्व सुविधायुक्त परिसर एवं वाहन सुविधा सभी प्रमुख मार्गो पर
वाहन एवं छात्रावास सुविधा उपलब्ध
आर. के. हॉस्पीटल के पास, गायरिया वास रोड़, हाउसिंग बोर्ड, धोइन्दा, राजसमन्द
फोन : 02952-220403 मो. 9460446756, 9414173503 Email : sps.dhoinda@gmail.com

सम्पादकीय

राजसमंद का जयवर्द्धन

'जयवर्द्धन' नाम सुनकर कुछ लोग हैरान रह जाते हैं। उनके मन में विचारों की एक पूरी श्रृंखला स्फुटित होने लगती है कि आखिर इस पत्रिका का नाम 'जयवर्द्धन' ही क्यों रखा? क्या यह किसी व्यक्ति का नाम है? इसका नाम यही क्यों रखा गया? यहां तक कि कुछ लोगों ने संकोच के साथ ही सही, पर पूछा भी, आपने इसका नाम 'जयवर्द्धन' क्यों रखा? अब प्रश्न उठा है तो उत्तर देना भी हमारा कर्तव्य हो जाता है। 'जयवर्द्धन' शब्द जय और वृद्धि शब्द से मिलकर बना है। जय का अर्थ है जीत, सफलता और कीर्ति। इसी तरह वृद्धि का अर्थ बढ़ना और वर्द्धन का बढ़ने की क्रिया। अब इसका अभिप्राय हम देश, प्रदेश और जिले की उन्नति से ले सकते हैं। अब राजसमन्द की जयवर्द्धन पत्रिका के सन्दर्भ में इसका अर्थ राजसमन्द की उन्नति या कीर्ति में वृद्धि करने का कार्य। राजसमन्द की ऐतिहासिक धरोहर, राजसमन्द की गौरवपूर्ण विरासत से सभी को रूबरू कराने का प्रयास जयवर्द्धन है। राजसमन्द की जय में किस प्रकार वृद्धि हो सकती है यह प्रेरित करना ही जयवर्द्धन है। राजसमन्द की कीर्ति बढ़ाने का कार्य जिन्होंने किया है, उन्हें जनता के सामने लाकर नई पीढ़ी को प्रेरणा देने का कार्य जयवर्द्धन है। इसलिए हम कह सकते हैं कि जयवर्द्धन एक असामान्य नाम है। यह नाम अपने अंदर एक अर्थ का सागर समेटे हुए है। इसकी जितनी व्याख्या की जाए उतनी ही कम है।

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
उप सम्पादक व निदेशक	विजय शर्मा
संवाददाता	हितेन्द्रसिंह चौहान
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल, भवानीसिंह

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** घुटनों के बल चलता युवा राजसमंद — पेज 3-6
2. **कवर स्टोरी 2 :** जनता की उम्मीदों पर कौनसा विधायक उतरा है खरा — पेज - 7
3. **शख्सियत :** गोविन्द के नाम 17 विषयों में पीजी का रिकॉर्ड — पेज -10
4. **संस्कृति संस्कार :** थाईलैंड में भारतीय संस्कृति की झलक — पेज- 11
5. **कानून अधिकार :** ये है नारी सुरक्षा के कानून — पेज - 12
6. **माटी का लाल :** बहुआयामी प्रतिभा के धनी अफंगी — पेज - 18
7. **कविता :** (1) अपना प्यारा राजसमंद (2) इन्टरव्यू — पेज - 25
8. **राशिफल :** अप्रेल 2018 — पेज - 27
9. **पाठक प्रतिक्रिया** — पेज - 29
10. **मेवाड़ी चौपाल :** माड़साब रौ जीव जाणै — पेज - 30
11. **कहानी :** टीका — पेज - 31
12. **कड़वा सच :** अगले जनम मोहे टेपा ही कीजो — पेज -33

आवश्यकता

मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए

पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015

देवगढ़ - कमल शेख, 94147-86464

रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728

आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट

कुंभलगढ़ - देवीसिंह मो. 8003124089

गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283

बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406

कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378

नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क

गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624

मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

घुटनों के बल चलता 'युवा' राजसमंद

27 वर्ष पार करके भी अधूरी है बचपन की ख्वाहिशे

विकास की जमीनी हकीकत

राजसमंद के कुंभलगढ़ की गजपुर ग्राम पंचायत की एक ढाणी (भील बस्ती) जहां आने जाने के लिए सिर्फ पगडंडी है। बस्ती के बीमार/ प्रसूता को घर से सड़क तक यूं आज भी खाट पर लिटा कर लाने को मजबूर है लोग।

राजसमंद. यह उम्र है सोच को हकीकत में बदलने की। भविष्य को सुरक्षित करने की। मंजिल तक पहुंचने और खुद को हमेशा स्वस्थ स्फूर्त रखने की। मगर अफसोस 27 वर्ष की उम्र में भी अबोध नौ महीने के नौनिहाल की तरह घुटनों के बल रेंग रहा है। उठ- खड़ा होने व आत्मनिर्भर बनने के लिए न किसी ने सहारा दिया न सलाह। ताकत जहां बदलने की है, मगर निराश, हताश सिर झुकाएं बैठा। न भविष्य का सोचा और न बचपन की ख्वाहिशे पूरी की। खाने-पीने में ही बीत गया बचपन। बगैर पढ़े ही निकल गई किशोरावस्था। अब उम्र जवां हो गई, मगर जेहन में अब भी ख्वाब बचपन के ही समेटे है।

यह कहानी है राजसमंद जिले की। 10 अप्रेल 1991 को उदयपुर जिले के कुछ हिस्सों से राजसमंद जिले के रूप में अस्तित्व में आया। एक सपना संजोया गया कि यह क्षेत्र हर दृष्टि से तरक्की करेगा। यहां की प्राकृतिक सम्पदा व मानव संसाधन का समुचित उपयोग होगा और उत्पादन, शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार और विकास के मामले में इक्कीस साबित होगा। मगर, अफसोस सपना हकीकत में बदल न सका। बीता वक्त लौटकर नहीं आता, पर वर्तमान जरूरत को सुधारकर भविष्य सुनहरा बनाया जा सकता हैऔर गुजरे समय की कसक को भी दूर किया जा सकता है। राजसमंद जिले के तीन दशक होने को आए, पर यहां से पीछे की तरफ झांके तो कुछ नहीं है और आगे देखे तो ढेर सारे उम्मीदे। अब जरूरत है उन उम्मीदों, ख्वाहिशों, जरूरतों को पूरी करने के ठोस प्रयास हो।

अतीत से सीख, सदुपयोग की पहल

राजसमंद जिले के समग्र विकास को लेकर अब हर शख्स को अतीत से सीखकर वर्तमान का सदुपयोग कर भविष्य को उज्जवल बनाना है। समीक्षा जरूर करनी चाहिए कि आखिर बीते वर्षों में क्या पाया और क्या रह गया ? यह भी तय हो कि मौजूदा मानवीय और भौतिक संसाधनों का कितना उपयोग हम कर पाए और आने वाले बीस वर्षों में हमारा लक्ष्य क्या होगा ?

कृषि विकास के ठोस प्रयास नहीं

राजसमंद झील को छोड़कर सिंचाई की बड़ी योजना नहीं है। बेड़च का नाका से सिंचाई जल उपलब्ध कराना सिर्फ कागजों में है। जिले में लगातार घटती कृषि भूमि को बचाने व कुओं व जलाशयों का जलस्तर बढ़ाने के प्रयास नगण्य है। किसान फसल खराबे के मुआवजे के मापदण्ड को लेकर सवाल उठाते रहे हैं। व्यावसायिक खेती, सिंचाई व खेती के नए तकनीकी उपक्रमों को अपनाने की तरफ किसानों का रुझान बेहद कम है। जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। सरकार ने यहां कृषि व पशुपालन शिक्षा आधारित संस्थानों की स्थापना में बेरुखी दिखाई।

व्यवस्थित मार्बल मंडी की दरकार

राजनीतिज्ञों की इच्छा शक्ति का अभाव , प्रशासनिक स्तर पर लापरवाही के चलते गत 27 वर्ष मे भी राजसमंद में सभी सुविधाओं से युक्त व्यवस्थित मार्बल मंडी मूर्त रूप नहीं ले पाई। इस दौरान मात्र प्रस्ताव ही बने तथा सबने इसे राज्य सरकार के भेजने के साथ ही सबने अपने कर्तव्य की इतिश्री करली ।लाखों रुपए का राजस्व देने के अलावा सैकड़ों लोगों को रोजगार देने वाला यह उद्योग आज

विकास की ख्वाहिशे जो अधूरी

राष्ट्रीय स्मारक : महाराणा प्रताप की रण स्थली हल्दीघाटी (खमनोर) को राष्ट्रीय स्मारक का ओहदा। हालांकि संरक्षण-रख रखाव का अभाव व पर्यटकों के लिए आबाद नहीं।

विजय स्मारक : दिवेर में महाराणा प्रताप की विजय स्थली पर विजय स्मारक का निर्माण। हालांकि यह स्थल पर्यटकों से आबाद न हो सका।

ड्राइविंग इंस्टीट्यूट : रेलमगरा में देश का दूसरा ड्राइविंग इंस्टीट्यूट स्थापना हुई, मगर लक्ष्य के अनुरुप कोई सार्थक परिणाम नहीं आ पाए।

नगर परिषद : राजसमंद नगरपालिका को नगर परिषद का दर्जा मिला, मगर स्टाफ व अन्य संसाधन अब भी गांव से बदत्तर।

पर्यटन चौपाल : कुंभलगढ़ दुर्ग पर पर्यटन चौपाल (प्रयोगशाला) के लिए केन्द्र सरकार ने पांच करोड़ रुपए दिए, मगर प्रशासन द्वारा उपयुक्त जमीन उपलब्ध नहीं करवाने से बजट लेप्स हो गया।

पुनर्वास केन्द्र : 50 की क्षमता वाला विमंदित पुनर्वास केन्द्र निर्माण की घोषणा वर्ष 2012 में हुई, मगर स्थापना नहीं हो पाई। नारी निकेतन का भी अभाव है।

शिक्षा की दुर्दशा : शैक्षिक विकास के लिए अकूत पैसे खर्च किए, मगर शैक्षिक गुणवत्ता बरकरार नहीं पाई। 8वीं के कई बच्चों को हिन्दी पढ़ना- लिखना तो दूर वर्णमाला तक का ज्ञान नहीं है। उच्च शिक्षा के लिए छात्र-छात्राएं उदयपुर जाने को मजबूर है।

चिकित्सा को इलाज : आरके जिला चिकित्सालय में सिटी स्केन मशीन की सौगात मिली, मगर उस अनरुप विशेषज्ञों की नियुक्ति नहीं हुई। अर्से बाद भी 200 बेड का नहीं हो पाया। चिकित्सकी ढांचे में एक सामान्य चिकित्सालय, नौ सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 42 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 215 उप स्वास्थ्य केन्द्र है, मगर पचास फीसदी विशेषज्ञ चिकित्सकों के पद रिक्त होने से जनता को फायदा नहीं मिल पा रहा है। इसलिए जिला अस्पताल में प्रारंभिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा तक की दुर्गति हुई है।

भी व्यवस्थित मार्बल मंडी को तरस रहा है। जिले में मार्बल की प्रख्यात मंडी है। देश के कोने-कोने से खरीदार यहां आते हैं। यहां मार्बल व्यवसाय फला-फूला तथा अनेक मार्बल इकाइयां भी स्थापित हुई लेकिन यहां लम्बे समय से एक व्यवस्थित मंडी की दरकार है जहां एक ही छत के नीचे सभी सुविधाएं उपलब्ध मुहैया हो सके। इसके लिए मार्बल गेंगसा, मार्बल कटर, मार्बल गोदाम, ट्रांसपोर्ट आदि सुविधा एक छत के नीचे उपलब्ध हो ताकि खरीदार को परेशानी का सामना नहीं कर ना पड़े। इससे खरीदारों की संख्या बढ़ेगी तो कारोबार स्वत: ही बढ़ जाएगा। सरकार के राजस्व में भी वृद्धि होगी।

पूरा नहीं हो पाया ट्रांसपोर्ट नगर का ख्वाब

राजसमंद मार्बल बहुल्य जिला होने के साथ साथ जिला मुख्यालय पर टायर निर्मात्री कम्पनी की इकाई जे.के फैक्ट्री भी स्थापित है। जिले में करीब दस हजार से अधिक ट्रकों का आवागमन होता है। जिला बनने के बाद यहां एक ट्रासंपोर्ट नगर तक नहीं बन पाया। जिला मुख्यालय पर दुघर्टनाओं से बचने के लिए शहर के बाहर एक ट्रांसपोर्ट नगर का होना जरूरी है लेकिन कतिपय कारणों के चलते यह योजना मूर्त रूप नहीं ले पाई। यहां हाइवे पर रामेश्वर महादेव मंदिर के सामने , हाइवे रोड़ पर भूमि आवंटित की गई । लेकिन कतिपय कारणों के चलते यह योजना मूर्त रूप नहीं ले पाई तथा आज तक ट्रांसपोर्ट नगर अस्तित्व में नहीं आ पाया। वर्तमान में यह मार्बल स्लेरी का डम्पिंग यार्ड बन कर रह गया है तथा पूरे क्षेत्र में जगह जगह सफेद पहाड़ से दिखाई देने लगे है।

पर्यटन को नहीं मिला बढ़ावा

कुम्भलगढ़ महोत्सव के अलावा पर्यटन विभाग के पास पर्यटन को बढ़ावा देने का ठोस जरिया नहीं है। नाथद्वारा, हल्दीघाटी व

कुम्भलगढ़ पर केन्द्रित विकास ने कांकरोली, चारभुजा और देवगढ़ जैसे संभावनाओं वाले इलाकों को इस लिहाज से दरकिनार कर दिया। राजसमंद को इस बार भी जिला पर्यटन अधिकारी नसीब नहीं हुआ। पर्यटन विकास की कोई बड़ी योजना भी विभाग के हाथ में नहीं है। जैन मंदिर (देलवाड़ा) राजसमंद झील, तांत्या टोपे की रणस्थली (रकमगढ़ का छापर), पहाड़ी पर्यटन क्षेत्र गोरमघाट, बाघेरी का नाका, मचीन्द के महल व जैन मंदिर और मृणशिल्प कला केन्द्र (मोलेला) पर भी सरकार की नजर-ए-इनायत नहीं हुई।

यहां है पर्यटन की संभावनाएं

- श्रीनाथजी मंदिर (नाथद्वारा)
- कुम्भलगढ़ दुर्ग (केलवाड़ा)
- युद्धभूमि हल्दीघाटी (खमनोर)
- जैन मंदिर (देलवाड़ा)
- गोरीधाम, देवगढ़
- सूरजकुंड थुरावड़- मजेरा
- राजस्थान का सबसे बड़ा भीलबेरी जल प्रपात, देवगढ़
- लक्ष्मण झूला, रामदरबार सैवंत्री
- रूपनारायण मन्दिर सेवन्त्री
- श्री द्वारिकाधीश मंदिर (कांकरोली)
- नौ चौकी पाल, राजसमंद झील (कांकरोली)
- प्रताप की विजयस्थली (दिवेर)

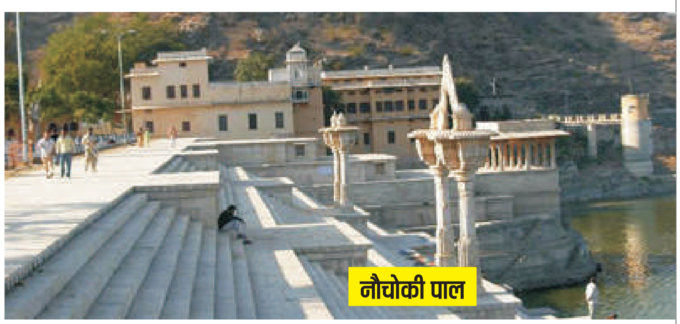

नौचोकी पाल

- तांत्या टोपे की रणस्थली (रकमगढ़ का छापर)
- चारभुजानाथ मंदिर (चारभुजा)
- पहाड़ी पर्यटन क्षेत्र गोरमघाट (देवगढ़)
- बाघेरी का नाका (मचीन्द)

परिवर्तन के अग्रगामी, सहगामी और अनुगामी बने

राजसमंद जिला स्थापना के 27 वर्ष पूर्ण कर 28वें में प्रवेश हो गया है। यह उत्सव, उमंग व उल्लास का अवसर है। होना भी चाहिए। हम चौथाई सदी सफर कर पौने तीन दशक की यात्रा के पड़ाव पर है। जिला स्थापना दिवस पर जनता शासन, प्रशासन प्रतिकात्मक आयोजन कर इतिश्री कर लेते हैं। हम भी इस दिन के बाद अपने दड़बो में दुबक जाते हैं। सवाल यह है कि आखिर स्थापना दिवस का सबब क्या हो ? जहां तक हम समझते हैं कि यह अवसर अतीत के अवलोकन का, वर्तमान के सदुपयोग और भविष्य की दिशा तय करने का है।

बहुत गहराई से पड़ताल की जरूरत नहीं। क्योंकि युवा, किशोर पीढ़ी वर्तमान में जीना ज्यादा पसंद करती है। अब मेवाड़ के इस नाभी केन्द्र राजसमंद जिले की पहचान महाराणा प्रताप, हल्दीघाटी, कुंभलगढ़, दिवेर, नौचोकी, श्रीनाथजी, श्री द्वारकाधीश, चारभुजाजी, परशुराम जी, गिलूंड, देलवाड़ा, देवगढ़, कुंभा मदारिया, सरदारगढ़, रम्तला भले हो, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय पटल पर आज भी वह उदयपुर के हिस्से के रूप में ही प्रसिद्धि पा रहे हैं। राजनैतिक- भौगोलिक पहचान हमारी 27 वर्ष पूर्व अलग भले हो गई, पर इतना लम्बा अन्तराल हमारी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान फलक पर नाकाफी साबित हुआ है। हां, हम यह भी मानते हैं कि 10 अप्रैल 1991 के बाद कुछ भी नहीं हुआ। यह कहना बेमानी होगा, अलबत्ता यह जरूर है कि हमारी अपेक्षा अधिक सफलता उतनी नहीं। आकांक्षा, इच्छा अथवा लालसा असीम है और पदार्थ समीम। यहां से संघर्ष शुरू होता है, जो कभी समाधान देता है तो कभी समस्या भी पैदा करता है। वस्तुतः विकास के चिंतन में यह जरूरी है कि हम समाज, मानस, अर्थ और राजनीति इन चारों बिंदू को ध्यान में रखें। यह चारों परस्पर जुड़े है। इनमें से किसी एक के प्रति मोह का आग्रह समग्र विकास में असंतुलन पैदा करता है। ऐसे में हमें भौतिक-मानवीय विकास के मोर्चे पर समीक्षा एवं योजनाबद्ध संतुलित कार्य करना होगा।

लोकतंत्र में नए सिरे से पैदा हुए राजनैतिक सामन्तों के दावे और वादे तो बहुत है, पर राष्ट्रीय राज्य स्तरीय विभिन्न विचाराधाराओं की सरकार प्रवृत्त फ्लेगशीप योजनाओं से इतर हमारे इलाके को क्या विशेष दिला पाए, समीक्षा इसकी होनी चाहिए। नगर-गांव की सड़क, सामुदायिक भवन, अटक से कटक तक सभी बना रहे हैं। इसमें नया क्या है ? कोई गिनाने लायक ऐसा काम जिसके कारण 10-15 हजार लोगों को रोजगार मिला हो। ऐसा बांध-नहर जिससे किसानों की माली हालत में सुधार हुआ हो। सिक्सलेन-फोरलेन, रेल-ब्रॉडगेज, उच्च शिक्षण संस्थान, अस्पताल, विश्वविद्यालय, कृषि आधारित प्रोजेक्ट, पेयजल का दीर्घकालीन स्थायी समाधान, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के स्टेडियम तरणताल, पर्यटन के बड़े विकास कार्य, जिससे देसी- विदेशी पर्यटकों का आवागमन बढ़े और स्थानीय लोगों को रोजगार मिले।

इतना अवश्य है कि इनमें से कुछ ककाम आगे बड़े हैं, पर सफर अभी बहुत शेष है। कागजी घोड़े दौड़ रहे हैं, उम्मीद है जल्द जमीनी हकीकत भी सामने होगी। समालोचना के समय इस बात का भी ध्यान रखे कि हमारे नीति नियताओं ने हमारे क्षेत्र के लिए क्या किया, पर इसके साथ यह भी जरूरी है कि हमने क्या किया ? समस्या उठा कर हो हल्ला मचाने वाले भी देश के लिए एक समस्या ही है। ऐसे में समाध्धान के हम भागीदार बने तथा परिवर्तन का दौर पुष्ट हो सकेगा।

दिनेश श्रीमाली,
पर्यावरणप्रेमी कांकरोली

तभी राजसमंद में बढ़ पाएगा पर्यटन

जिले की 27वीं वर्षगांठ मनाई। मनोहारी राजसमंद झील की अविस्मरणीय साज सज्जा के साथ प्रवासित पर्यटन प्रेमियों को यह सोचने को विवश होना पड़ा कि एक उभरता हुआ क्षेत्र भी है मेवाड़ में जहां पधारो म्हारा देस वाली मनुहार भरी उक्ति उनका इन्तजार कर रही है। यह जो कल का दृश्य था, उसे हर वर्ष का स्थायी फिनोमिना कैसे बनाया जाए। यह इवेंट राजसमंद पर्यटन का स्थायी मील का पत्थर साबित हो। दूरगामी उद्देश्य के साथ राणा राजसिंह कैसे संयुक्त हो और जिला स्तरीय कार्यक्रम के साथ जनभावना से कैसे एकमेक हो सके, इस पर विचार जरूरी है। ध्यान रहे यह दिवस राजसमंद शहर का नहीं, बल्कि जिले के आंतरिक उछाह का पर्व है। इसके सुगंध भरे छींटे सुदूर लगेतखेड़ा, शेखावास, गिलूंड, देलवाड़ा, साथिया तक के हर गांव-ढाणी तक जानी चाहिए। यह जरूरी है।

डॉ. राकेश तैलंग, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी राजसमंद

शहर-देहात के विकास कार्यों में अग्रणी राजसमंद विधायक

पब्लिक रिलेशन में मंत्री फर्स्ट, फिर अन्य विधायक

राजस्थान में विधानसभा के चुनाव इस वर्ष के अंत तक होंगे। अब आगामी चुनाव में अपनी अपनी जीत निश्चित करने के लिहाज से एन-केन प्रकारण जनता को लुभाने, मनाने व अपने अपने पक्ष में करने को लेकर सत्तारूढ़ भाजपा के साथ ही कांग्रेस के नेताओं ने भी प्रयास शुरू कर दिया। भाजपा हाईकमान के निर्देशों के बाद राजसमंद के विधायकों ने पिछले एक पखवाड़े से सुदूर गांव-ढाणी तक जाने के लिए शिड्यूल ही तय कर डाला। शिलान्यास, उद्घाटन व लोकार्पण कार्यक्रमों के बहाने उच्च शिक्षा मंत्री व राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी के साथ ही भीम विधायक व मगरा विकास बोर्ड अध्यक्ष हरिसिंह रावत और कुंभलगढ़ विधायक सुरेन्द्रसिंह राठौड़ ने भी डोर टू डोर जनसंपर्क शुरू कर दिया। इस दौरान मंत्री व विधायकों को कई जगह गांव की समस्याओं को लेकर जनता के कठघरे में भी खड़ा होना पड़ रहा है, तो कई जगह उनके कार्य की वाहवाही भी हो रही है।

प्रदेश के गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया के उदयपुर शहर में वार्ड सभा के दौरान महिलाओं ने घेर लिया और बोली कि आपको हम वोट देते हैं, मगर आपको जनता तो सिर्फ वोट के समय याद आती है। इस पर गृहमंत्री कटारिया ऐसे क्रोधित हो गए और वार्ड की महिलाओं को बोल दिया कि वे उनके वोट को कुएं में फेंक दें। उन्हें कोई जरूरत नहीं। गृहमंत्री का यह वक्तव्य सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ और उसके साथ ही राजसमंद के सभी विधायकों को लेकर कई तर्क-वितर्क शुरू हो गए। सोशल मीडिया के मुताबिक उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी की विधानसभा क्षेत्र के शहर व गांव-ढाणी तक पकड़ है और उनका पब्लिक रिलेशन भी

उतना ही मजबूत है। राजसमंद विधानसभा में भाजपा के दो धड़ों में बंटे होने के बावजूद पब्लिक रिलेशन के लिहाज से मंत्री मजबूत है और अक्सर मंत्री का संवाद सीधे जनता से ही रहा है।

जनता से हमेशा व नियमित जुड़ाव

विधायक व मंत्री माहेश्वरी का राजसमंद विधानसभा क्षेत्र में नियमित जुड़ाव रहा है, जिसकी वजह से उनका पब्लिक रिलेशन काफी मजबूत है। जनसुनवाई का तंत्र भी लोगों के लिए कई मायने में खास है। प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष तौर पर लोगों द्वारा को विधायक से की गई लगभग हर मांग पत्र का लिखित जवाब संबंधित व्यक्ति के घर तक पहुंचता है। साथ ही मांग पत्र पर कार्रवाई के लिए तत्काल संबंधित विभागीय अधिकारी को भी विधायक द्वारा लिखते हुए उसकी प्रतिलिपि परिवादी को भी भेज जाती है। इस सुविधा के चलते लोगों का मंत्री के प्रति विश्वास मजबूत है। हालांकि इस वर्ष के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव में ही उनके पब्लिक रिलेशन का सटीक परिणाम सामने आएगा। शहर व ग्रामीण क्षेत्र में भी मंत्री माहेश्वरी के प्रति यह भी चर्चा है कि राजसमंद में उनके मुकाबले व उनके बराबरी का कोई नेता पूरे राजसमंद जिले में नहीं है। क्योंकि वे भाजपा की केन्द्रीय कार्यकारिणी में भी सक्रिय होने से उनकी दिल्ली तक भी पहुंच है, जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तौर से राजसमंद के लोगों को भी फायदा मिला है। ऐसी दशा में राजसमंद में उनके बराबरी का कोई कद्दावर नेता नहीं है, जिससे भाजपा में लंबे समय से चल रही बाहरी प्रत्याशी की गुटबाजी को लेकर भी हाईकमान के पास कोई विकल्प नहीं है। हालांकि अप्रत्यक्ष तौर पर भाजपा के कई पदाधिकारी विधायक चुनाव लड़ने का दावा ठोक रहे हैं, मगर उनकी बराबरी का कोई विकल्प नहीं है।

गट्टू बन्ना को चाहते हैं लोग, पर असंतुष्ट भी

आमेट में गट्टू बन्ना के नाम पर विख्यात कुंभलगढ़ विधायक सुरेन्द्र सिंह राठौड़ के प्रति भी लोगों में विश्वास है। लोगों के छोटे मोटे कार्य को लेकर तव्वजों नहीं देने के कारण उनका वोट बैंक प्रभावित हो सकता है। यूं तो गट्टू बन्ना की आमेट शहर व ग्रामीण क्षेत्र में साख व धाक है, मगर कुंभलगढ़ व चारभुजा क्षेत्र में खरवड़-परमार व गुर्जर बाहुल्य क्षेत्र में उनकी सक्रियता नहीं रहना चिंताजनक भी है। खैर, अब विधायक राठौड़ ने राजसमंद विधायक की तरह गांव-ढाणी में जनसुनवाई शुरू कर दी। फिर भी लोग तो इसी नजरिये से देख रहे हैं कि यह चुनाव साल है। इसलिए विधायक हमारे गांव-ढाणी में आए हैं। हमारी समस्या से उनका कोई मतलब नहीं।

जुबां पर आ गया विधायक का दर्द

जिला परिषद की साधारण सभा में कलक्टर पीसी बेरवाल, सीईओ गोविंदसिंह राणावत की उपस्थिति में कुंभलगढ़ विधायक राठौड़ ने आरोप लगाया कि प्रशासन व विभागीय अधिकारी केवल राजसमंद विधानसभा क्षेत्र में ही विकास कार्यों पर ध्यान दे रहे हैं। कुंभलगढ़ के साथ ही अन्य विधानसभा क्षेत्र के लंबित कार्यों को पूरा करने को लेकर कोई विभाग गंभीर नहीं है। उन्होंने नाम लिए बिना उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी पर तंज कसते हुए विभागीय अफसरों को चाटुकारिता का आरोप लगाया। बैठक में विधायक राठौड़ बोले, तब एक बारगी सदन में सन्नाटा पसर गया। विधायक की बात का समर्थन करते हुए सांसद हरिओमसिंह राठौड़ ने भी अफसरों की कार्यशैली पर सवाल उठाए।

भीम में रावत का बढ़ा कद

भीम विधानसभा क्षेत्र में विधायक हरिसिंह रावत का पिछले वर्षों में भले ही ज्यादा पब्लिक रिलेशन नहीं रहा, मगर जिला प्रमुख प्रवेश कुमार सालवी व भाजपा जिलाध्यक्ष भंवरलाल शर्मा का गृह क्षेत्र होने से कई मायने में रावत का कद बढ़ा है। भीम में पूर्व मंत्री लक्ष्मण सिंह रावत से द्वेषता, बेटे व पुत्रवधू के मुकदमे और देवगढ़ में भाजपा से बगावत कर नगरपालिका चुनाव में भाजपा को पटखनी देने वाले अजय सोनी की तकरार ने उनकी साख को गिराया है। अब विधायक रावत के प्रति लोगों में कितना विश्वास कायम है। इसको फैसला तो अब आगामी चुनाव में जनता ही करेगी।

सोशल मीडिया पर विधायक के चुनाव

नाथद्वारा विधायक कल्याणसिंह चौहान के निधन के बाद उनके विकल्प को तलाशने के लिए जहां भाजपा नेता जुटे हुए हैं, वहीं क्षेत्र के दर्जनभर से ज्यादा कार्यकर्ता अपने आप को चौहान के विकल्प के तौर पर पेश करने लग गए हैं। इसी तरह कुंभलगढ़ क्षेत्र में भी गटु बना के सामने कुछ लोग दावेदारी ठोकने को चुनावी समर में उतरने की तैयारी कर रहे हैं, तो भीम विधानसभा क्षेत्र में भाजपा, कांग्रेस के साथ ही निर्दलीय दावेदारों की भी लंबी सूची तैयार हो गई है। इसमें मौजूदा विधायक हरिसिंह रावत के अलावा पूर्व डीईओ मोहन सिंह चौहान, दिलीपसिंह सिसोदिया, वीपीसिंह काछबली, देवगढ़ के अजय सोनी व कांग्रेस नेता लक्ष्मणसिंह रावत आदि नामों को लेकर सोशल मीडिया पर नाप-तोल किया जा रहा है।

हमारा भीम - राजसमंद shared their post
25 February
हमारा भीम - राजसमंद created a poll
20 February
#महापोल_
###भीम देवगढ़ विधानसभा क्षेत्र से इस बार कौन जीतेगा ?
अपना अमूल्य वोट देकर जनता को उत्साहित करें
(टिकीट दोनों उम्मीदवारों का फिक्स नही है लेकिन लगभग ९०% तय है)

श्रीमान लक्ष्मण सिह रावत
श्रीमान हरि सिह रावत

हमारा भीम - राजसमंद shared Jay Padiyar's post.
1 February
Plz vote and share this voting poll
अनुवाद देखें
Jay Padiyar created a poll.
30 January
भीम-देवगढ़ विधानसभा क्षेत्र से इस बार कौन जीतेगा?

श्रीमान लक्ष्मण सिंह रावत
श्रीमान हरि सिंह रावत

हमारा भीम - राजसमंद shared their post
10 February
डॉक्टर वी पी सिंह जी v/s अजय सोनी जी
आज अंतिम दिन है कृपया ज्यादा से ज्यादा वोट कर प्रत्याशियों का हौसला बुलंद करें
हमारा भीम - राजसमंद created a poll
4 February
#अगर इस बार युवा उम्मीदवारों को भीम-देवगढ़ विधानसभा क्षेत्र का टिकिट मिलता है तो आप किसको अपना वोट एवं समर्थन देंगे ?
समय सीमा 7 दिन
((कृपया ज्यादा से ज्यादा वोट एवं शैर करें))

वी.पी. सिंह (काछबली)
अजय सोनी (देवगढ़)

17 विषयों में पीजी करने पर युनिक वर्ड रिकॉर्ड में जुड़ा कांकरोली के गोविंद सनाढ्य का नाम

दिल में कुछ करने का इरादा रखते है,
वही आसमान छूने का माद्दा रखते है।
उनकी उड़ानो को क्या रोके विपरीत
हवाएं, जो अपनी शक्ति से भी हौसला
ज्यादा रखते है।।

ये पंक्तियां राजसमंद के गोविन्द सनाढय 'दीक्षित' पर सटीक सार्थक सिद्ध हो रही है। राजसमंद जिले का एक अध्यापक जो अपनी सादगी के साथ अपनी लगन के दम पर जब मुकाम हासिल करता है, तो मेवाड़ वासियों का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है।

सनाढ्य ने जिन 17 विषय में पीजी करने का न सिर्फ एक अनूठा रिकॉर्ड बनाया, बल्कि हर विषय में पारंगत बनने का प्रयास किया। पेशे से शिक्षक होने से प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष रूप से इसका फायदा संबंधित विद्यालय के छात्र छात्राओं को ही मिलेगा। स्वयंपाठी छात्र के रूप में विभिन्न विषयों में पीजी किया। इस अनूठी प्रतिभा के लिए मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर की ओर से सनाढ्य को राज्यपाल कल्याणसिंह द्वारा स्वर्ण पदक से नवाजा गया। अभी सनाढ्य योगा विषय पर पीजी कर रहे हैं। अपने माता पिता और गुरु को आदर्श बना कर जीवन की कठिन डगर पर जब एक साधारण व्यक्ति, असाधारण कारनामा कर दिखा देता है तो वो दूसरो के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत बन जाता है। सनाढ्य एक ऐसे शिक्षक है, जो निरन्तर पढ़ने वाले शिष्य भी नज़र आते है।

जब से पहली कक्षा में पढ़ने लगे, आज तक पढ़ाई कर रहे है। एक भी वर्ष उनके जीवन का ऐसा नही रहा, जिसमें उन्होंने परीक्षा और पुस्तकों से दूरी बनाई हो। उसका परिणाम यह रहा कि युनिक वर्ड रिकॉर्ड में आज उनका नाम दर्ज हो गया। एक अध्यापक की भूमिका में हर वर्ष स्कूल में अपने विषय में बच्चों का 100 प्रतिशत परिणाम दिया है। ये आकड़े जिस विद्यालय में पढ़ाया, उसमें मौजूद है।

किसी रिकार्ड बनाने की जिद्द में नहीं, सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों के हित में ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक दृष्टिकोण है। वो कहते की निरन्तर अभ्यास से, साधना के मार्ग को पाया जा सकता है। शिक्षा तो जितनी अर्जित करो, उतनी ही कम। यह अथाह सागर है। सात जन्मों तक भी पढाई करो तो पूर्ण नहीं होती।

आज राजसमन्द ही नहीं, पूरा राजस्थान गोविन्द सनाढ्य जैसे अनमोल व्यक्तित्व पर नाज़ करता है।

इन विषयों में किया पीजी

इतिहास, समाज शास्त्र, हिन्दी, राजनीति शास्त्र, भूगोल, दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान, गांधी एवं शान्ति अध्ययन, संस्कृत, अर्थ शास्त्र, मानव अधिकार, व्यवसायिक अध्ययन, बैकिंग, जैनोलोज़ी (प्राकृत) और राजस्थानी भाषा।

कम्बोडिया में भारतीय संस्कृति की झलक

भारतवर्ष के उदात्त जीवन दर्शन ज्ञान परंपरा गौरवशाली सनातन संस्कृति तथा महान जीवन मूल्यों के आधार पर ही सारी दुनिया ने भारत को विश्वगुरु माना है तथा इसके प्रमाण सारी दुनिया के कोने कोने में आज भी सहज ही प्राप्त होते हैं। आवश्यकता है, उसे भारतीय दृष्टि से देखने, समझने एवं पुन: प्रचारित एवं प्रसारित तथा स्थापित करने की और यह कार्य साहित्य ही कर सकता है। क्योंकि साहित्य समाज का मार्गदर्शक एवं सृष्टा है। वास्तव में सत्साहित्य ही है, जो व्यक्ति को संस्कारयुक्त चरित्र संपन्न एवं उसे अलौकिक, आध्यात्मिक तथा सम्यक् सांसारिक दृष्टि प्रदान करता है। किसी उदात्त लक्ष्य को ध्यान में रखकर अखिल भारतीय साहित्य परिषद, साहित्य संवर्धन यात्राओं का आयोजन करती है, जिससे साहित्यकारों को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक राष्ट्रीय दृष्टि प्रदान हो एवं उनके द्वारा निर्मित साहित्य समाज का सम्यक् मार्गदर्शन कर उसे भारतीय ज्ञान परंपरा से अवगत करा सकें। इसी क्रम में 22 फरवरी से लेकर 1 मार्च तक साहित्य परिषद द्वारा कम्बोडिया व थाईलैंड की साहित्य संवर्धन यात्रा संपन्न की गई, जिसमें विभिन्न भाषा प्रांतों के 17 साहित्यकारों ने भाग किया। राजस्थान क्षेत्र के प्रतिनिधि के नाते मुझे भी यात्रा में सम्मिलित होने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ, जो कि अत्यंत ही प्रेरणास्पद तथा ज्ञानवर्धक रहा।

इस यात्रा में कम्बोडिया के विश्व प्रसिद्ध एवं दुनिया के सबसे बड़े हिंदू मंदिर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो भगवान विष्णु का विशाल मंदिर है। मंदिर के दाहिने भाग की दीवारों पर सम्पूर्ण रामायण के घटनाक्रमों का चित्रण पत्थरों पर खुदे हुए हैं तथा इसी प्रकार बाएं भाग के दीवारों पर महाभारत के घटनाक्रमों के अत्यंत ही प्रभावकारी सुंदर एवं विहंगम चित्रों का होना सुखद आश्चर्य प्रदान करता है। मंदिर की विशालता, भव्यता व प्राचीनता वास्तव में दर्शनीय है। सहस्त्र लिंगा नाम का स्थान जो एक पहाड़ी पर स्थित है। वहां पर नाग शैया पर लेटे भगवान विष्णु साथ में भगवान ब्रह्मा, शिव की मूर्तियां अत्यंत ही रोमांच प्रदान करती हैं। वहीं पर पत्थरों पर खुदे हुए 1000 शिवलिंग एवं उनके बीच में द्वादश ज्योतिर्लिंग होना, मन को सहज ही आश्चर्य में डालता है। अंकोरवाट जिसे मंदिरों का शहर कहते हैं। वहां पर भगवान शिव का सूर्य का एवं भगवान विष्णु का मंदिर अपनी भव्यता एवं प्राचीनता के लिए विश्व विख्यात है।

इसी प्रकार थाईलैंड के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का नाम सुवर्ण भूमि एवं उसके अंदर ही विशाल सागर मंथन की प्रतिमा अत्यंत मनोहारी है। अपने पूर्वजो ने कितने प्रयत्नपूर्वक सनातन संस्कृति का प्रचार प्रसार एवं स्थापना की होगी। देखकर आश्चर्य होता है। बैंकॉक में भगवान बुद्ध की 16 बाईं 46 मीटर की शयन मुद्रा में प्रतिमा तथा मंदिर के तोरणद्वार पर गरुण स्थित भगवान विष्णु का चित्र मन में सहसा आश्चर्य पैदा करता है। काली मां, हनुमान जी तथा शिव मंदिर भी अपने आप में विलक्षण हैं। थाईलैंड में अभी राजशाही लोकतंत्र है और अभी वहां 10वें राम राजा का शासन चल रहा है। प्रत्यक्ष देखकर सुखद आश्चर्य होना स्वाभाविक ही था। थाईलैंड में वर्तमान में 30000 मंदिर हैं। जगह जगह हिंदू संस्कृति की गहरी छाप सहज ही दिखाई दे जाती है। भारत की सांस्कृतिक विरासत की वैश्विक क्षितिज पर इतनी गहरी छाप अत्यंत गौरवान्वित करने वाली है।

आज आवश्यकता है, इसकी प्रामाणिक जानकारी संपूर्ण देश वासियों को प्राप्त हो तथा हम अपने पूर्वजों के द्वारा स्थापित जीवन मूल्यों को ग्रहण कर इसके अनुसार अपना जीवन आचरण तथा व्यवहार बनाकर पुन: विश्व का मार्गदर्शन करें। इसके लिए विश्व तैयार खड़ा है। हमें अपने गुरुतर दायित्व को समझना तथा दृढ़ता से इसके लिए कार्य करना होगा तभी विश्व का कल्याण संभव है जो हमारी नियति तथा विश्व की आवश्यकता है। गौरवशाली अपना अतीत होगा। भविष्य उज्जवल हो, आओ अब बदले वर्तमान।

भारत माता की जय।

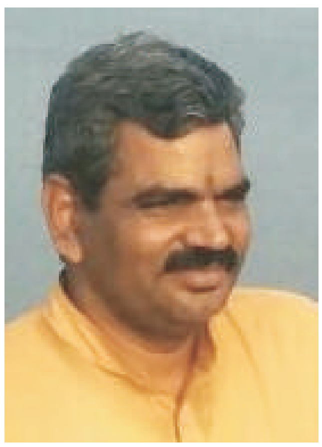

विपिन बी पाठक,
क्षेत्रीय संगठन मंत्री
अखिल भारतीय
साहित्य परिषद जयपुर
मो. 9413257750

ये है नारी सुरक्षा के कानून

किसी समय असहाय एवं अबला समझी जाने वाली नारी आज पूर्णतया सुरक्षित है। उसके हित सुरक्षित है। कानून के अन्तर्गत महिला हितों को पूर्ण संरक्षण प्रदान किया गया है। 'चन्द्रा राजकुमारी बनाम पुलिस आयुक्त, हैदराबाद'(एआईआर 1998 आन्ध्रप्रदेश 302) के मामले में यह कहा गया है कि 'नारी केवल एक व्यक्ति ही नहीं, अपितु एक शक्ति भी है। उसके हितों की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।' महिला हितों के संरक्षण से जुड़े प्रमुख कुछ कानून निम्नानुसार है–

1. लज्जाभंग से संरक्षण : भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 354 में स्त्री की लज्जा भंग को दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। स्त्री की लज्जा भंग से अभिप्राय लज्जा भंग के आशय से उस पर किए जाने वाले हमले अथवा आपराधिक बल प्रयोग से है। किसी स्त्री को निर्वस्त्र कर देना, उसे गिरा देना, उसके किसी अंग को छूना आदि लज्जा भंग है। श्रीमती रूपन देवल बजाज बनाम केपीएस गिल (एआईआर 1996, एससी 309) के मामले में किसी स्त्री के कुल्हे पर हाथ मारने को स्त्री की लज्जा भंग माना गया है।

2. बलात्कार से संरक्षण : भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 376 बलात्कार को दंडनीय अपराध घोषित करती है। बलात्कार से अभिप्राय है कि किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध या उसकी सहमति के बिना या उसे धमकी देकर अथवा दबाव या प्रलोभन द्वारा सहमति प्राप्त कर, उसे मृत्यु अथवा उपहति का भय बताकर या उसे स्वयं को अपना मिथ्या पति बता कर लैंगिंक संभोग (मैथुन) करना। यदि स्त्री की आयु 18 वर्ष से कम है, तो उसकी सहमति का कोई अर्थ नहीं है। (ललता प्रसाद बनाम मध्यप्रदेश राज्य, एआईआर 19979 एससी 1276)

3. यौन उत्पीड़न से संरक्षण : कामकाजी महिलाओं का यौन उत्पीड़न से संरक्षण उच्चतम न्यायालय के एक निर्णय की महत्त्वपूर्ण देन है। विशाका बनाम राजस्थान राज्य (एआईआर 1997, एससी 3011) के मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा राज्यों से यह कहा गया है कि वे कामकाजी महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न के निवारण के लिए कानून बनाए। किसी कामकाजी महिला से शारीरिक सम्पर्क करना या संपर्क करने का प्रयास करना, उसके समक्ष यौन सम्पर्क का प्रस्ताव रखना, अश्लील टिप्पणियां करना, उसे कामोत्तेजक चित्र बताना आदि को यौन उत्पीड़न माना गया है।

4. देह शोषण अथवा प्रदर्शन से संरक्षण : आज नारी देह शोषण अथवा देह प्रदर्शन की शिकार है। विज्ञापनों एवं सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के नाम पर नारी का देह शोषण अथवा देह प्रदर्शन किया जा रहा है। महिलाओं का अशिष्ट रूपण (निषेध) अधिनियम, 1986 की धारा 6 में इसे अधिकतम 5 वर्ष तक की अवधि के कारावास अथवा एक लाख रुपए तक के जुर्माने से दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। किसी स्त्री की आकृति अथवा शरीर को अशिष्ट रूप से प्रदर्शित करना, उसके चरित्र को कलंकित करने वाला कोई चित्र, विज्ञापन आदि प्रस्तुत करना नारी का अशिष्ट रूपण माना गया है। चन्द्रा राजकुमारी बनाम पुलिस आयुक्त हैदराबाद (एआईआर 1998 आंध्रप्रदेश 302) के मामले में आन्ध्रप्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा यह कहा गया है कि सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के नाम पर नारी का देह शोषण अथवा देह प्रदर्शन नहीं किया जा सकता। सौन्दर्य का प्रदर्शन बुरा नहीं है, लेकिन उसे आपत्तिजनक रूप में प्रस्तुत किया जाना दंडनीय अपराध है।

5. घरेलू हिंसा से संरक्षण : अब नारी घरेलू हिंसा से भी पूर्णतया सुरक्षित है। घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 महिलाओं को शारीरिक, भावनात्मक लैंगिंक एवं आर्थिक हिंसा के विरूद्ध संरक्षण प्रदान करता है। घरेलू हिंसा से पीड़ित महिहला अधिनियम की धारा 12 के अंतर्गत संरक्षण एवं उपचार हेतु मजिस्ट्रेट से आवेदन कर सकती है। धारा 18 से 22 तक के अंतर्गत मजिस्ट्रेट घरेलू हिंसा से पीड़ित नारी के संरक्षण, निवास, आर्थिक सहायता, अभिरक्षा, प्रतिकर आदि के बारे में आदेश दे सकेगा। ऐसे आदेश की पालना नहीं करने वाले व्यक्ति के लिए धारा 31 के अंतर्गत एक वर्ष तक की अवधि के कारावास अथवा 20 हजार रुपए तक के जुर्माने का भी प्रावधान है।

6. बाल विवाह से संरक्षण : महिलाओं को बाल विवाह से निजात दिलाने के लिए भी कानूनी संरक्षण प्रदान किया गया है। बाल विवाह (निषेध) अधिनियम 2006 के अंतर्गत बाल विवाह को दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। नए अधिनियम में बाल विवाह को शून्यकरणीय भी बना दिया गया है। अब बाल विवाह का पीड़ित व्यक्ति ऐसे विवाह को शून्य घोषित करा सकता है। बाल विवाह को रोकने के लिए धारा 13 के अंतर्गत न्यायालय में व्यादेश भी प्राप्त किया जा सकता है। बालक से अभिप्राय यहां पुरुष की दशा में 21 एवं स्त्री की दशा में 18 वर्ष से कम आयु से है।

7. दहेज से संरक्षण : दहेज समाज पर एक कलंक तथा महिलाओं के लिए अभिशाप है। दहेज के कारण आज अनेक महिलाएं अकाल मृत्यु की शिकार हो रही हळै। अत: दहेज की रोकथाम के लिए दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 में दहेज की मांग को दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। इतना ही नहीं, भारतीय दंड संहिता 1860 की ध्धारा 304ख में दहेज मृत्यु को एक गंभीर अपराध मानते हुए इसे आजीवन कारावास से दंडनीय बनाया गया है। दहेज के पीछे आत्महत्या को भी दहेज मृत्यु माना गया है। (प्रदीप सिंह बनाम झारखंड राज्य एआईआर 2007, एससी 2154)

8. क्रूरतापूर्ण आचरण से संरक्षण : महिलाओं के साथ क्रूरतापूर्ण आचरण अथवा व्यवहार आज एक सामान्य बात हो गई है। उसे शारीरिक एवं मानसिक यातनाएं देने की घटनाएं प्रतिदिन कारित होती रहती है। ऐसी स्थिति में ऐसे क्रूरतापूर्ण आचरण अथवा व्यवहार को रोके के लिए भारतीय दंड संहिता 1860 में एक नई धारा 498क जोड़ कर इसे दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। निर्दयतापूर्ण आचरण से अभिप्राय ऐसे किसी भी आचरण अथवा व्यवहार से है, जो किसी स्त्री के शरीर, स्वास्थ्य अथवा जीवन को संकटापन्न बना दें। इसके लिए तीन वर्ष तक की अवधि के कारावास का प्रावधान है। इस प्रकार अब नारी पूर्णतया सुरक्षित है। उसके हितों के संरक्षण के लिए अनेक कानून विद्यमान है। संविधान में भी नारी हितों को पर्याप्त संरक्षण प्रदान किया गया है।

डॉ. बसन्तीलाल बाबेल

पूर्व न्यायाधीश एवं

अपनों की सजा

विजय शर्मा @ राजसमंद

liverajsamand.com

सुबह सुबह गली में तेज आवाज की बातों से मेरी तो नींद उड़ गई। गली में एक कामवाली मोहल्ले की औरतों को बता रही थी कि जगह जगह हमारे अम्बेडकर और गांधीजी की मूर्तियां टूट रही है। असामाजिक तत्व हम निम्न वर्ग के पूजनीय का ही अपमान कर रहे हैं और इधर सुप्रीम कोर्ट का फैसला भी हमारे खिलाफ हो रहा है। कहने को तो आरक्षण है, मगर हमें नौकरियों के लिए भी दर दर की ठोकरे खानी पड़ रही है। हमारा तो जीना ही दुभर हो गया है। मोहल्ले की औरतें अनभिज्ञ मुद्रा में उसकी बातें सुन रही थी।

मैं भी अब उठकर अखबार पढ़ रहा था, तो मैंने देखा कि नाथद्वारा में मूर्ति तोड़ने वाले निम्न वर्ग के ही युवक थे। तब मुझसे रहा नहीं गया और मैंने उनको बताया कि ये देखों मूर्ति तोड़ने वाले भी निम्न वर्ग के ही है। आजकल ज्यादातर जातिवाद के झगड़े व दंगे-फंसाद इसी तरह फैलाए जाते हैं। यहां हिन्दू-मुस्लिम आपस में दुश्मन नहीं है, मगर हिन्दू मुस्लिम में लड़ाई करवाने वाले किसी मृत गाय का अवशेष डालकर कई बेगुनाहों की जान ले लेते हैं। कई अनैतिक लोग अपना राजनीतिक फायदा लेने के लिए इस तरह की घटनाओं को अंजाम देते हैं।

रही बात आरक्षण की, तो जरा विचार करो आजादी के बाद से ही आरक्षण होने के बावजूद निम्न वर्ग की परिस्थितियां क्यों नहीं बदली ? आरक्षण की बदौलत ही कई निम्न वर्ग के लोग कई उच्च पदों पर कार्यरत होकर आर्थिक रूप से काफी सम्पन्न होने के बावजूद वे अपनी संतान के लिए भी आरक्षण की मांग करते हैं। यदि इस तरह के निम्न वर्ग के समृद्ध लोग अपना आरक्षण छोड़ देवें, तो कई निम्न वर्ग के अपने भाईयों को रोजगार मिल सकता है और उनके आर्थिक स्तर में भी सुधार संभव है।

अब ये बातें सुनकर कामवाली मौन विचारों में खो गई। उसके चेहरे पर अपनों के प्रति प्रश्न चिह्न साफ दिख रहा था।

प्लेसमेंट के 40 कार्मिकों से हर माह 365 रुपए की वसूली पर दो गिरफ्तार

पन्नाधाय सिक्युरिटी सर्विसेज का प्रबंधक द्वारा लिपिक के माध्यम से ले रहे थे रिश्वत

राजसमंद. आरके राजकीय जिला चिकित्सालय में पन्नाधाय सिक्युरिटी सर्विसेज उदयपुर के माध्यम से प्लेसमेंट के तहत कार्यरत करीब चालीस कार्मिकों से हर माह 365 रुपए की चौथ वसूली की जा रही थी। प्रत्येक कार्मिक को मासिक मानदेय का चेक देने से पहले 365 रुपए संग्रहित करने का ठेका लिपिक को दे रखा था। इस तरह बिना लाभ हानि में कार्य करने वाली प्लेसमेंट एजेंसी का काला कारोबार उजागर हो गया। यह खुलासा भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो द्वारा 565 रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार दिनेश स्वर्णकार से पूछताछ से हुआ। एसीबी की पूरी ट्रेप कार्रवाई में भी हर कार्मिक से 365 रुपए की चौथ वसूली करना सामने आया और यह चौथ वसूली पन्नाधाय सिक्युरिटी सर्विसेज के राजसमंद पबंधक राजेंद्र धाभाई द्वारा करवाई जा रही थी। आरके जिला अस्पताल में सुरक्षा गार्ड, नर्सेज, सफाईकर्मी, सहायक कर्मचारी के साथ ही दफ्तर के मंत्रालयिक पदों पर 40 से ज्यादा कार्मिक कार्यरत है। इसके लिए जिला अस्पताल द्वारा 1 मई 2017 को पन्नाधाय सिक्युरिटी सर्विसेज से अनुबंध किया गया है। इसके तहत अस्पताल द्वारा प्रतिमाह एजेंसी को भुगतान किया जा रहा था।

जननी सुरक्षा चेक में भी धांधली

जननी शिशु सुरक्षा योजना के तहत आरके जिला अस्पताल के जनाना वार्ड में जन्म लेने वाले बच्चों के लिए शिशु व महिला को सरकार द्वारा प्रोत्साहन राशि दी जाती है। जिला अस्पताल में प्रसव कराने वाली प्रसूता के परिजनों को भी चेक से पहले रिश्वत देने की बात भी बात सामने आई। इसकी शिकायत कुछ लोगों ने एसीबी दल को बताई। एसीबी दल द्वारा अब समग्र पहलुओं से गहन जांच की जा रही है।

डेढ़ माह के मानदेय की थी रिश्वत

हर माह के मानदेय की एवज में 365 रुपए तय है। दिसम्ब 2017 के आधे माह व जनवरी 18 के पूरे माह के मिलाकर आरोपित दिनेश ने रिश्वत के 565 रुपए मांगे थे। हालांकि दिसंबर माह का मानदेय तो पहले भुगतान कर दियाए मगर दिसम्बर माह का मानदेय देने की एवज की रिश्वत राशि उसे नहीं दी। इसलिए अब 4 हजार 507 रुपए का चेक देने की एवज में उक्त रिश्वत मांगी।

एक ही प्लेसमेंट एजेंसी के कार्मिक

शिकायतकर्ता सुरक्षा गार्ड लीलाधर पालीवाल पन्नाधाय सिक्युरिटी सर्विस एजेंसी उदयपुर के अधीन कार्यरत है और रिश्वत मांगने वाला लिपिक दिनेश स्वर्णकार भी उसी एजेंसी के अधीन कार्यरत है। लीलाधर 16 दिसंबर 2017 को ही एजेंसी के माध्यम से जिला अस्पताल में नौकरी लगा। इसके बाद दिसंबर माह के 15 दिन का भुगतान भी काफी समय बाद किया। प्रति कार्मिक हर माह के लिए 365 रुपए की रिश्वत तय हैए मगर लीलाधर के आधे दिसंबर माह के मानदेय भुगतान एवज की रिश्वत भी बकाया थी। इसलिए उससे दिनेश ने 565 रुपए की रिश्वत मांगी थी।

नाथद्वारा जलापूर्ति व्यवस्था में फर्जी कार्मिकों के नाम 2 लाख की बजाय हर माह उठाए 9-9 लाख

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की छापेमार कार्रवाई व जांच से हुआ खुलासा

नाथद्वारा शहर में जल वितरण व्यवस्था में कई फर्जी कार्मिकों के नाम पर लाखों रुपए का भुगतान नगरपालिका नाथद्वारा से उठाने की शिकायत पर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने नगरपालिका नाथद्वारा में छापेमार कार्रवाई की। बिना टेंडर के ही तत्कालीन नगरपालिका आयुक्त तनुजा सोलंकी व जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग के सहायक अभियंता नाथूसिंह राठौड़ द्वारा उदयपुर की स्वयंसेवी संस्था को कार्मिक सप्लाई का कार्य दे दिया। संस्था के अधीन करीब 40 कार्मिक कार्यरत है, जिनका मासिक वेतन 5 हजार रुपए के आधार पर 2 लाख रुपए प्रतिमाह बन रहा है, मगर संस्था को प्रतिमाह 9-9 लाख रुपए भुगतान करने का आरोप है। एसीबी ने जांच के बाद नगरपालिका से आवश्यक रिकॉर्ड जब्त कर लिया। इस दौरान जलदाय विभाग कनिष्ठ अभियंता दीपमाला सैनी, नगरपालिका आयुक्त लजपालसिंह से पूछताछ की गई।

बिना टेंडर के एनजीओ को दे दिया काम

एसीबी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेश चौधरी के नेतृत्व में दल ने नगरपालिका कार्यालय नाथद्वारा में दबिश दी। एसीबी ने रिकॉर्ड को खंगालते हुए रिकॉर्ड जब्त कर लिया। जांच में पता चला कि नगर पालिका ने बिना निविदा प्रक्रिया अपनाए ही जल वितरण व्यवस्था के लिए 40 कार्मिक लगाने का कार्य कतिपय प्लेसमेंट एजेंसी को दे दिया। पालिका की तत्कालीन आयुक्त तनुजा सोलंकी व सहायक अभियंता नाथू सिहं राठोड़ ने बिना निविदा आमंत्रित किए उदयपुर की सोसायटी फोर रिसर्च सर्विस एंड वाटर बोर्न डीजिज ट्रीटमेंट (सरस्वती) को कार्मिक आपूर्ति का ठेका दे दिया। एसीबी की छापामार कार्रवाई के दौरान सहायक अभियंता नाथूसिंह दफ्तर में नहीं थे, तो एसीबी दल द्वारा कनिष्ठ अभियंता दीपमाला सैनी से पूछताछ की गई और मौजूदा आयुक्त लजपालसिंह ने सारे दस्तावेज एसीबी को उपलब्ध करवा दिए। एसीबी द्वारा रिकॉर्ड जब्त करने के साथ ही ठेकेदार के अधीन कार्यरत कार्मिक नरेश कुमार व राहुल कुमार आदि से भी पूछताछ की गईए जिन्होंने नियुक्ति से अब तक मिलने वाले मानदेय व कतिपय संस्था की मनमानी के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

डेढ़ साल में उठाए सवा करोड़

सोसायटी फोर रिसर्च सर्विस एंड वाटर बोर्न डीजिज ट्रीटमेंट उदयपुर को फरवरी 2015 से प्रतिमाह 9 लाख 52 हजार 774 रुपए का ठेका हुआए जिसके तहत 40 कार्मिक जल वितरण व्यवस्था के लिए नियुक्त किए गए। संस्था द्वारा प्रति कार्मिक को 5 हजार रुपए का मानदेय दिया जा रहा है और इसके हिसाब से 40 कार्मिकों का मानदेय 2 लाख रुपए ही हो रहा है, जबकि नगरपालिका द्वारा संस्था को प्रतिमाह 9 लाख 52 हजार 774 रुपए का भुगतान किया जा रहा है। इसके तहत 16 माह में नगरपालिका द्वारा संस्था को 1 करोड़ 12 लाख रुपए का ज्यादा भुगतान कर दिया गया। भुगतान में तत्कालीन आयुक्त तनुजा व सहायक अभियंता के ही होना सामने आया है।

शांतिभंग के आरोपित को छोड़ने की एवज में 20 हजार की रिश्वत लेते देलवाड़ा थानेदार और सरपंच गिरफ्तार

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो राजसमंद के दल ने रंगे हाथ पकड़ा

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद. भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो राजसमंद की टीम ने देलवाड़ा पुलिस थाने में 20 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए थानेदार माधवसिंह और देलवाड़ा सरपंच दिनेश पालीवाल को गिरफ्तार कर लिया। थानेदार ने यह रिश्वत की राशि शांतिभंग के मुकदमे को रफारफा करने की एवज में सरपंच के जरिये ली थी। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की कार्रवाई से समूचे देलवाड़ा थाने के अफसरों व जवानों में हडकंप मच गया।

जानकारी के अनुसार भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो को शिकायत मिली थी कि धारा 151 के शांतिभंग मामले की फाइल बंद करने की एवज में देलवाड़ा थाना पुलिस द्वारा 20 हजार रुपए की रिश्वत मांगी जा रही है। एसीबी द्वारा सत्यापन कराया गया, जिसमें पाया गया कि थानेदार माधवसिंह ने देलवाड़ा सरपंच दिनेश पालीवाल के मार्फत रिश्वत की राशि मांगी थी। इसका सत्यापन होने के साथ ही भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो दल ने रंगे हाथ रिश्वत लेते पकडने् के लिए कार्ययोजना बनाई। इसके तहत फरियादी को रिश्वत की राशि लेकर देलवाड़ा थाने बुलाया गया, जहां रिश्वत की राशि देलवाड़ा सरपंच ने लेकर देलवाड़ा थानेदार माधवसिंह को सौंप दी। इसके बाद फरियादी का इशारा पाते ही एसीबी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेश चौधरी ने मय दल के दबिश दे दी। सरपंच व थानेदार को पकडने् के बाद उनकी तलाशी लेकर उनसे 20 हजार रुपए की राशि बरामद कर ली और दोनों के हाथ धुलवाए गए, जिससे उनके हाथ पर रंग उभर आया। एसीबी दल ने रिश्वत की राशि जब्त करने के बाद थाना कार्यालय व आवास की भी तलाशी ली। उसके बाद एसीबी टीम दोनों आरोपितों को लेकर राजसमंद एसीबी कार्यालय पहुंचीए जहां गहन पूछताछ के बाद रिपोर्ट तैयार की गई। दूसरी तरफ आरोप लगा कि पुलिस ने जिस युवक को शांतिभंग के आरोप में पकड़ा था, उससे तो देलवाड़ा के कतिपय लोगों द्वारा पीटा गया। फिर सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और पीड़ित को ही शांतिभंग के आरोप में गिरफ्तार कर लिया।

आपके शहर राजसमंद में आपके लिए लाए हैं....
शुद्ध, वेजीटेरियन, ताजा एवं जायकेदार भोजन

लक्ष्मी भोजनालय

थाली
मात्र
60 रुपए

हमारे यहां थाली, पार्सल, टिफीन सभी प्रकार की भोजन सुविधा उपलब्ध हैं। रेट मात्र 60 रुपए

थाली (थाली, रोटी, सब्जी, दाल, चावल, चटनी, छाछ)

प्रातः एवं सायं दोनों समय ताजा एवं शुद्ध भोजन

स्पेशल
दालबाटी

- शुद्ध शाकाहारी
- घर जैसा खाना
- वाजिब दाम
- उत्तम क्वालिटी
- स्वादिष्ट भोजन

सभी ऑफिस, बैंकों एवं कार्यालयों में सर्विस दी जाएगी
सर्विस चार्ज मात्र10 रुपए

साधना शिखर रोड, जलचक्की, कांकरोली, जिला-राजसमंद
मो. 8209721172, 9462500795

बहुआयामी प्रतिमा के धनी 'अफ़ंगी'

बहुआयामी प्रतिभा के धनी, मांगीलाल अफ़ंगी का जन्म जोधपुर में उदयराम-मोहनी देवी के घर 17 अक्टूबर 1947 को हुआ। उनका बचपन में नाम पृथ्वीराज था, मगर जन्म से ही बीमार रहने के कारण, बोलमा में दस वर्ष तक मांग कर कपड़े पहनाने से माता- पिता ने बाद में नाम मांगीलाल रख दिया व आबो हवा मारवाड़ की आपके स्वास्थ्य के अनुकूल ना होने से राजसमन्द के धोईन्दा ग्राम में आकर बस गए। माताजी कि प्रेरणा से आप में भक्ति के भाव बचपन से ही अंकुरित होने लग गए। आपकी जीवन यात्रा में, फतेहलाल अनोखा, कमल नयन शर्मा, जमना प्रसाद पंवार, कमल सांचीहर, मनुभाई वासु और अनगिनत मित्र रहे। इनकी पत्नी कमलादेवी है। दो बेटियां निर्मला, गीतादेवी और तीन बेटे जिनमें बड़े बेटे जगदीश की तो पूर्व में ही मृत्यु हो गई थी, जबकि दूसरा पुत्र दर्शन व तीसरा मुकेश पालीवाल है।

उनके बारे में डॉ. राकेश तैलंग ने कुछ इस अंदाज में कहा कि श्री अफंगी साहब के व्यक्तित्व व कृतित्व को देखने वाला हर व्यक्ति जानता है कि वे अपनी जीवन जीने की कला यात्रा में 'एकला चालो रे' की उत्कृष्ट जिजीविषा के साथ जिते थे। क्षुद्र स्वार्थ एवं थोथी प्रसिद्धि के लिए वे अपनी भाव एवं कला क्षमताओं को बाज़ारवादी संस्कृति के बदले त्यागने को कभी तैयार नही हुए।

जीवन यात्रा में उनका पाथेय हमेशा भगवत आस्था रही थी और जन कल्याणकारी साहित्य सृजन उनका मुख्य ध्येय रहा। अफंगी साहब का ये मत भी था कि आत्मा व परमात्मा परस्पर एक तदरूप है, एक रूप है, पुष्प में निहित रंग व सुगंधवत् चेतना की झंकृति का एक आकृषण केन्द्र है। मस्त मौला मिज़ाज के धनी, अफंगी, यारों के यार थे। अफंगी के हरमोला व्यक्तित्व का परिचय उनके अनुज भ्राता हरिवल्लभ जी पालीवाल ने कुछ यूं कहा कि मुझे बचपन से ही मन्दिर आदि धार्मिक, सांस्कृतिक स्थलों पर होने वाले धार्मिक भजन, कीर्तन, धुन आदि में रूचि होने तथा घर में भी अग्रज मांगीलाल जी 'अंफ़गी' द्वारा प्रदत सांस्कृतिक वातावरण ने मेरे लिए 'ईश्वर प्रदत्त अनुपम वरदान' का काम किया।

एक श्रेष्ठ शिक्षक, चित्रकार, कथावाचक, गायक, नृत्य निर्देशक, कवि एवं गीतकार थे। आपकी रचनाओं में अनुस्यूत ईश्वर के प्रति प्रगाढ़ समर्पण भाव साथ ही नीति परक सशक्त अभिव्यक्ति से भारतीय संस्कृति के संवाहक शास्त्रों और संस्कृत वाङ्मय के विषयों से परिचित होने का लाभ मिलता है।

श्रद्धेय अफ़ंगी साहब के देश भक्ति से ओत प्रोत गीतो में भारत माता के प्रति जिन गौरवशाली भावनाओं का समावेश है। मंच पर बाल कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियों में जो उत्साह, उमंग और तन्मयता आपके गीतों के माध्यम से दृष्टिगत होती है, सचमुच अतुलित आनंद का अजस्र स्त्रोत होती है। राज्य और राष्ट्रीय स्तर के अनेक कार्यक्रमों में छात्रों के द्वारा प्रस्तुतियां दिलाई। आपके कई गीतों ने राज्य स्तर पर प्रथम स्थान भी प्राप्त किया। राजकीय सेवा में रहकर आपने जिस तरह अपने शिष्यों को गीत, संगीत, नृत्य की तालिम दी। आज भी कई प्रतिभा इस क्षेत्र में नाम रोशन कर रही है। साहित्यकार फतेहलाल गुर्जर 'अनोखा' ने आप के बारे में कहा कि अफ़ंगी जी, हिन्दी, राजस्थानी के मुर्ध्यन, गीतकार थे। गीतों को धुन देने में आप का कोई सानी नहीं, कई वाद्य यन्त्रों को आप बजाते थे। आप क्षेत्र के चित्रकारों में अपना उच्च स्थान रखते थे।

चित्रो में रंग देकर भाव उकेरने में माहिर थे। आपका साहित्यक योगदान में कई गीत, बाल गीत माला, जयघोष, काव्यायन प्रकाशित हो चुकी है और अनगिनत सम्मानों से जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर तक उन्हें नवाज़ा गया।

जिला साक्षरता कार्यक्रम में भी आपने अनुकरणीय साहित्यक योगदान दिया है। दया के सागर गोभक्त अफ़ंगी मूक प्राणियों के प्रति बड़ी करूणा रखते थे। पशुओं के प्रति उनकी संवेदना आमजनों की अपेक्षा कुछ अधिक थी। इसका प्रमाण उनके जीवन पेशा से जुड़ा एक प्रसंग है– गोपालक अफ़ंगी के यहां जो गाय थी, वो समय से पहले मर गई। अब सवाल ये था कि बछड़ी को कैसे जीवित रखा जाए। श्री अफ़ंगी प्रतिदिन बाज़ार से 1 लीटर दूध लाकर उस बिन मां के बच्चे को पिलाते थे।

बछड़ी जब एक वर्ष की हो गई, तो उसकी वर्षगांठ पर सभी गायो को हरी घास खिलाकर जन्मदिन मनाया। प्रख्यात गायक मोईनुद्दीन मनचला भी अफ़ंगी साहब को अपना गुरु मानते है। साहित्य सर्जक अफ़ंगी 7 जून 2009 को किसी आयोजन में निवर्तमान केन्द्रीय मंत्री डॉ. सीपी जोशी और निवर्तमान मुख्य मंत्री अशोक गहलोत के निमन्त्रण पर जयपुर कार से जा रहे थे। दुदु के पास सड़क दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। ये खबर सुनते ही पूरे राजसमन्द में शोक की लहर छा गई।

आज भी राजसमन्द वासियों को हरफन मौला मांगी लाल जी अफ़ंगी की स्मृति जेहन में तैरती रहती है। इस मृत्यु लोक में जो आया है। उसे जाना ही मगर किसी ने कहा है कि दुनिया में ऐसे काम करो, जो लिखने जैसे हो। या कुछ ऐसा लिख कर जाओ, जो पढ़ने जैसा हो, मैं तो यही कहूंगा कि मांगीलाल जी एक ऐसी शख्सियत थी, जिन्होंने बेहतर से बेहतरीन कार्य करके साहित्य और कला के क्षेत्र में राजसमन्द को पूरे भारत में पहचान दिलाई थी।

इस 'माटी के लाल' को में शत् शत् नमन करता हूं। उन्हीं कि लिखी पक्तियों से–

मन मन्दरिया माईने, बैठ्या आतम देव !
मुरख बारे मत रखड़, मनरा देवत सेव !!
मन री मुठ्ठी माईने, तीन लोक रो राज !
मन सूं मुगति मोक्ष है, मन मोटो महाराज !!

प्रस्तुतकर्ता :
सूर्य प्रकाश दीक्षित
कवि एवं साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

e-mitra
बिजली, पानी, टेलीफोन के बिल, जाति प्रमाण पत्र, मुल निवास प्रमाण पत्र, राशन कार्ड इत्यादी कार्य
ई-मित्र पर
कम्प्युटर शिक्षा के लिए राज्य सरकार द्वारा अधिकृत ज्ञान केन्द्र-
RS-CIT Computer Course
TALLY, ACCOUNTING
सनशाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
● पुराना बस स्टैंड, आईसीआईसीआई बैंक के पास केलवा ● हनुमाननगर, सायों का खेड़ा

बेटी जन्मने पर बहू को घर से निकाला

मियाला खेड़ा का मामला

देवगढ़. बेटे की चाह पूरी नहीं होने व महिला की कोख से एक के बाद एक कर पांच बेटियों के जन्म लेने पर सास ससुर व देवर ने मानवता की सारी हदे लांघते हुए एक महिला से बेरहम पिटाई कर उसे घर से बाहर निकाल दिया। साथ ही बेटियों को जन्म देने पर उसके हर्जाने के तौर पर दो लाख रुपए पीहर से लाने का फरमान सुनाते हुए चेताया कि जब तक दो लाख रुपए नहीं लाएगीए तब तक उसे घर में प्रवेश नहीं देंगे। पांचों मासूम बेटियों के साथ पीड़िता ने देवगढ़ थाने में पहुंच कर रिपोर्ट दी। जानकारी के अनुसार डोड खेड़ाए करेड़ा (भीलवाड़ा) हाल मियाला खेड़ा निवासी लीला पत्नी चुन्नीलाल प्रजापत ने डोड खेड़ाए करेड़ा (भीलवाड़ा) निवासी ससुर लादूलाल प्रजापत, जसुलाल प्रजापत, लेहरूलाल प्रजापत, मांगीदेवी पत्नी जसुलाल प्रजापत के खिलाफ देवगढ़ थाने में रिपोर्ट दी। आरोप है कि सास ससुर ने न चाहते हुए भी जबरन बेटे की चाह में वक्त से पहले ही उसकी कोख से एक के बाद एक कर पांच बेटियां जन्म गई। गत दस दिन पहले ही एक मासूम बेटी ने जन्म लिया, जिससे क्रोधित होकर सास ससुर व देवर ने बेरहम मारपीट की और गुप्तांगों पर भी वार किए। पुलिस ने रिपोर्ट लेने के बाद उसका अस्पताल में मेडिकल कराया गया।

दस दिन की मासूम बच्ची

प्रसव के दस दिन में ही प्रसूता को घर से बेदखल कर दिया, जो 10 दिन की मासूम बेटी के पूजा (8), सुनीता (7), खुशी (5), कंचन (3) को लेकर देवगढ़ थाने पर पहुंची। पीड़िता भाई ने रिपोर्ट दी।

आराम की बजाय भटक रही प्रसूता

आम तौर पर महिला के प्रसव पर एक से डेढ़ माह तक आराम करवाया जाता है, मगर इस पीड़िता की कोख से बेटी के जन्म लेने के एक सप्ताह में ही उसे घर से बेदखल कर सडकों पर भटकने को मजबूर कर दिया।

गांधीजी की मूर्ति तोडने़ पर तीन आरोपित गिरफ्तार

नाथद्वारा. होलीमगरा वाल्मीकि समाज बस्ती में महात्मा गांधी की मूर्ति तोडने़ पर उपजे विवाद में त्वरित कार्रवाई करते हुए नाथद्वारा पुलिस ने तीन युवकों को गिरफ्तार कर लिया। कथित तौर पर तीनों कांग्रेस समर्थित बताए जा रहे हैं, मगर कांग्रेस युवकों को एबीवीपी समर्थित बताया है। पुलिस के अनुसार होलीमगरा के अरविंद गहलोत पुत्र अशोक गहलोत, कुलदीप गहलोत पुत्र राजकुमार गहलोत एवं अंकित पुत्र एकलिंग प्रसाद को घोड़ाघाटी से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच की, तो तीनों ही युवकों के हुलिये सामने आ गए। बताया कि के बाद तीनों युवक घर से फरार हो गए।

घटना को अंजाम देने के पीछे तीनों ही आरोपित युवकों का मकसद शहर में माहौल खराब करना मंशा थी। उन्होंने किस

विचारधारा और मुद्दे को लेकर यह करतूत की। पुलिस इसकी अभी जांच कर रही है। खास बात यह है कि अशोक गहलोत ने मूर्ति तोड़ने की रिपोर्ट दी और पुलिस की जांच में उसी का पुत्र अरविंद भी मूर्ति तोड़ने में शामिल होना सामने आया।

बेमौसम की बारिश ने खराब की फसलें

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद. तेज गर्मी के बीच अप्रेल के प्रथम सप्ताह में दो दिन हल्की से तेज बारिश हुई, जिसकी वजह से खेतों में कटी फसलें गीली होने से खराब हो गई। तेज हवा के साथ आमेट क्षेत्र में ओले भी गिरे, जिसकी वजह से लोगों को काफी परेशान का सामना करना पड़ा।

जिला मुख्यालय राजसमंद के साथ नाथद्वारा, कुंभलगढ़, आमेट, देवगढ़, भीम, रेलमगरा, खमनोर, देलवाड़ा क्षेत्र में दोपहर बाद आसमान में काले घने बादल छाए गए। साथ ही तेज हवा के साथ रिमझिम से तेज बारिश हुई। इस कारण खेतों में थ्रेसर से गेहूं निकाल रहे किसानों के लिए बड़ी मुसीबत खड़ी हो गई। कई किसानों के फसलें खेतों में ही काट कर रख दी गई, जो बारिश की वजह से भीग गई और उसे दोबारा सुखाने के लिए किसानों को काफी कसरत करनी पड़ी। ओले गिरने से फसलें खराब भी हुई है। हालांकि मार्बल माइंनिंग क्षेत्र केलवा, मोरवड़, पिपलांत्री क्षेत्र में दो दिन की रिमझिम बारिश से वातावरण में फैले प्रदूषण से कई हद तक राहत मिली है।

ठाठ से निकली कुमावत समाज की शोभायात्रा

राजसमंद. रामनवमी पर कुमावत समाज की ओर से राजसमंद शहर में ठाठ बाट से शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा कुमावत समाज रूणपछौर चौकी संस्थान कांकरोली रावली पाटीया से प्रारम्भ होकर लंगोट चौराहा, विठ्ठल विलास बाग, कमल तलाई, 50 फीट रोड, टीवीएस चौराहा, जलचक्की, राठासेण माताजी, चौपाटी, जेके मोड़, छतरियां, मुखर्जी चौराहा से होती हुई पुन: रावली पाटिया पहुंची। इस दौरान शोभायात्रा का जगह जगह स्वागत किया गया। समाज प्रारंभ में श्रीराम, सीता माता, हनुमानजी की आरती के बाद अध्यक्ष सुंदर लाल दौराया ने भगवा झंडी दिखाकर शोभायात्रा रवाना की।

इस दौरान नारायण लाल पडीयार, भैरुलाल पालडिया, किशनलाल डूंगरवाल, मंदारीया चौकी अध्यक्ष खेमराज चाटवाल, भेरुलाल भदाणीया, जगदीश चन्द्र साडीवाल, मगनीराम नांदोलीया, पीपली आचार्य बामणिया चौकी अध्यक्ष कालूराम सिरोठा, बनास ढावा चौकी अध्यक्ष बाबूलाल पालडिया, बाबूलाल नराणिया, रामचन्द्र टांक, बंसीलाल गटोला, मांगीलाल बिज्या, भंवरलाल अन्यावडा, शंकरलाल भदाणीया, नारायण धनारिया, भैरुलाल धनारीया, त्रिलोक धनारीया, मोडिराम टांक, नानालाल साड़ीवाल, उदयलाल भदणीया, मांगीलाल अजमेरा, किशनलाल नांदोलीया, वेणीराम साडीवाल, लक्ष्मीलाल साबलिया, लक्ष्मीलाल सिरोठा, बालूराम रेणीवाल, हरीभगवान भदणीया, राधावल्लभ कुमावत आदि थे।

कच्छावा चौथी बार बने जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद. जिला बार एसोसिएशन के चुनाव न्यायालय परिसर स्थित बार भवन में चुनाव अधिकारी अनिल जोशी के सानिध्य में हुए। चुनाव में अधिवक्ता जयदेव कच्छावा चौथी बार अध्यक्ष बने। कच्छावा ने अधिवक्ता रामलाल को 9 मतों से हराया। कच्छावा की जीत पर कांकरोली चौपाटी पर आतिशबाजी की गई। चुनाव अधिकारी अनिल जोशी ने बताया कि चुनाव में बार के 220 सदस्यों में से 204 सदस्यों ने मतदान किया। इसमें जयदेव कच्छावा को 101, रामलाल जाट को 92 और राकेश पालीवाल को 11 मत मिले। इस पर कांकरोली चौपाटी पर प्रशंसकों ने आतिशबाजी की।

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise With Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

अपना प्यारा राजसमन्द

दस अप्रैल उन्नीस सौ इकरानवें, का दिन लाया था आनंद
क्योंकि इस दिन नए जिले के रूप में उभरा राजसमंद।
नामकरण क्यों हुआ ये इसका, सुन लो ये पावन प्रसंग।
'रा' से बनता राणा राजसिंह और बना है राजसमन्द।
'ज' से जरगा तीर्थ बना है, जहां रूके थे पाण्डव वृंद।
'स' से साधना शिखर प्यारा, जहां पधारे जैन मुनीवृंद।
'म' से महाराणा की भूमि, जहां हुआ मेवाड़ मुगल द्वंद्व।
'न्' से नाथद्वारा श्रीजी का, और बना है नन्दसमंद।
'द' से द्वारिकाधीश का मन्दिर, दाऊ जी का भी हैं संग।
इन सब शब्दों के भावों से, बनता प्यारा राजसमन्द।
जन्म दिवस की पावन बेला, आओ हम ले ये संकल्प।
अपने कर्मयोग से लाये, खुशी, उमंग और आनन्द।
आओ हम सब मिलकर बनाये, अपना प्यारा राजसमन्द।

श्रीमती सुमन प्रजापत
अध्यापिका राबाउप्रावि
धोइन्दा, जिला राजसमंद

गज़ल

गैरों से भी प्यार निभाना पड़ता है,
गम में भी हमको मुस्कराना पड़ता है।1।
ज़िंदा रहने की ख़ातिर इस दुनियां में,
दुश्मन से भी हाथ मिलाना पड़ता है।2।
बहुत कठिन है राहें जीवन की यारों।
कर हौंसला क़दम बढाना पड़ता है।3।
मिल जाता है इस जग में सब कुछ यारों।
खुद को माटी में यार मिलाना पड़ता है।4।
घुटती सांसों को मिल जाए छुटकारा।
सीने में बस जोश जगाना पड़ता है।5।
तलवारें यूं ही नहीं बनती लोहे से।
लपटों में फ़ौलाद पाना पड़ता है।6।
मिट सकता है मन में छाया अंधेरा।
बस आशा का दीप जलाना पड़ता है।7।
चाहे कैसी भी मुश्किल हो जीवन में।
कांधो पर हर बोझ उठाना पड़ता है।8।
शेर, गज़ल यूं लिखना आसां 'ऐश' नहीं।
दिल में अपने प्यार बसाना पड़ता है।9।

अश्वनी कुमार चावला
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली

इन्टरव्यू

मैं इन्टरव्यू देने गया।
लंबी कतार को देख कर घबरा गया।
रिक्त स्थान थे दस, उम्मीदवार थे पचास।
फिर भी मन में उम्मीद की थी, एक आस।
पर यह उम्मीद निराशा में थी सो बदल गयी।
जो मुसीबत जिन्दगी में सहनी थी सही।
मेरी जिन्दगी में निराशा कोई नई बात नहीं थी।
किसी ने निराशा में धैर्य रखने की बात कही थी।
अंकतालिकाएँ, सर्टीफिकेट इंटरव्यू देते देते, घायल हो गए।
लाख मरहम पट्टी की पर मौत की नींद सो गए।
अब इंटरव्यू देने की बात से भी नफरत हो गयी।
मेरे जीने की आस भी न जाने कहाँ खो गयी।
अब तो भगवान के वहाँ इन्टरव्यू दूँगा।
पुछूँगा, मुझसे क्या खता हो गयी।
जो मेरी किस्मत जीते जी सो गयी।
यदि मिल जाती एक अच्छी नौकरी,
अपनी भी शादी हो जाती,
मिल जाती एक अच्छी छोकरी।

शायर कैलाश स्वरूप शर्मा
जलचक्की, कांकरोली

आज ही प्रवेश लें
गर्मी की छुट्टियों में कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता
सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर
100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि
प्रशिक्षित फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण
Internet: ई-मेल अकाउंट खोलना, ई-बुक्स पढ़ना, विदेशी भाषा सीखना, टिकट बुकिंग, यु ट्यूब पर विडियो देखना, फोटो का ऑनलाइन स्टोरेज
MS Powerpoint: प्रजेंटेशन, फोटो एलबम, सर्टिफिकेट, पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड, कम्पनी प्रोफाइल, बिजनेस प्रजेंटेशन
MS-Word: बायोडेटा, निमंत्रण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, आई कार्ड, विज्ञापन/नोटिस, लेटर पेड/ऐनवल्प, विजिटिंग कार्ड्स
MS-Excel: बिजनेस प्लानर, हफ्ते के कामो की सूची, पॉकेटमनी प्लानिंग, जमा-खर्च, टेक्स केलकुलेटर, फोन डेटाबेस, डाटा विश्लेषण
राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RKCL
New RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
सनशाईन इंस्टीट्यूट
sunshininstitute9@gmail.com
हनुमान नगर, सांयों का खेड़ा मो. 7976752935, 9950084705
ICICI बैंक के पास बस स्टेंड, केलवा मो. 7976752935, 9950084705

विशेषांक टेलीफोन हेल्पलाइन

मात्र 50 रुपए में प्राप्त करें।

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

विशेष छूट के साथ मासिक पत्रिका की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

मासिक राशिफल अप्रैल 2018

मेष : बाहरी संपर्कों से लाभजनक स्थिति रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य से यात्रा के योग बन सकते हैं। पारिवारिक मामलों में अनुकूल स्थिति के साथ शुभ कार्य हो सकते हैं। वाहनादि थोड़ी सावधानीपूर्वक चलाएं। नौकरीपेशा को अपने कार्य के प्रति सजग रहना होगा।

वृष : वाहनादि सावधानी से चलाएं। स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। पारिवारिक मामलों में महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे। शत्रुपक्ष प्रभावहीन होगा। साझेदारी के कार्य में सावधानी बरतें। नौकरीपेशा संभलकर रहे। भाग्य का साथ कम ही मिलेगा। यात्रा से बचना होगा।

मिथुन : दांपत्य जीवन में वाद विवाद की स्थिति को टालना होगा। स्वास्थ्य की चिंता रह सकती है। पारिवारिक मामलों में सुखद स्थिति रहेगी। व्यापार व्यवसाय में मिली जुली स्थिति का वातावरण रहेगा। नौकरीपेशा के प्रति सजग रहें। वाणी में संयम रखना होगा।

कर्क : समय विपरीत होने से सावधानीपूर्वक चलें। व्यापार व्यवसाय में जोखिम न उठाएं। नौकरीपेशा को समझदारी से कार्य करना होगा। पारिवारिक मामलों में खर्च होगा। शत्रुपक्ष प्रभावहीन होंगे। वाहन सावधानी से चलाएं। लेन देन संभलकर करें।

सिंह : संतान पक्ष के कार्य में सावधानी रखें। वहीं उनके स्वास्थ्य की चिंता रह सकती है। आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। धन की बचत नहीं होगी। नौकरीपेशा के लिए समय कुछ सुधारवादी रहेगा। वहीं व्यवसाय की स्थिति में भी सुधार होगा।

कन्या : मकान भूमि संबंधित मामलों में सावधानी रखना होगी। व्यापार व्यवसाय में ध्यान रखना होगा। दांपत्य जीवन में मिली जुली स्थिति रहेगी। शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहेगा। आर्थिक मामलों में प्रयत्नपूर्वक सफल मिलेगी। नौकरीपेशा को संभलकर चलना होगा।

तुला : भाई से अप्रिय समाचार मिल सकता है। अत: धैर्य रखना होगा। साझेदारी के मामलों में सावधानी बरतें। दांपत्य जीवन में मिली जुली स्थिति रहेगी। संतान का सहयोग मिलने से राहत, विद्यार्थी वर्ग सुखद स्थिति पाएंगे। लेन देन समय पर होगा।

वृश्चिक : स्त्री पक्ष से लाभ के योग बनेंगे। पारिवारिक कार्य में सहयोग देना होगा, वहीं घर परिवार में शुभ कार्य बनेंगे। वाहनादि सुख मिलेगा। संतान पक्ष से प्रसन्नता रहेगी। शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहेगा। कर्ज की स्थिति में सुधार होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

धनु : सोच विचारकर कार्य करें। स्वास्थ्य में गड़बड़ी रहेगी। वाणी पर ध्यान देकर चलना होगा। नहीं तो कार्य बिगड़ सकते हैं। व्यापार .व्यवसाय में उतार चढ़ाव रहेगा। नौकरीपेशा भी सावधानी रखें। भाग्यबल का सहारा मिलने से कुछ राहत भी मिलेगी।

मकर : स्वभाव में जिद्दीपन यदि है तो त्यागना होगा। पारिवारिक मामलों में सावधानी रखना होगी, वहीं माता का स्वास्थ्य खराब हो तो सतर्कता रखें। व्यापार में कोई बदलाव न करें। नौकरीपेशा संभलकर रहें। स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा। बचत संभव है।

कुंभ : साझेदारी में यदि व्यवसाय करते हो या सोच रहे हो, तो सावधानी रखें। भाग्य का साथ मिलने से थोड़ी राहत भी मिलेगी। शत्रुपक्ष की चाल को समझकर कार्य करें। पारिवारिक समय ठीक रहेगा। संपत्ति के मामलों में अनुकूल स्थिति रहेगी।

मीन : परिश्रम अधिक करने पर मनमाफिक सफलता से वंचित रहेंगे। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। व्यापार व्यवसाय में जोखिम से बचना होगा। नौकरीपेशा भी सावधानी से चलें। संतान पक्ष के मामलों में सावधानी रखें। शत्रु प्रभावहीन होंगे।

ज्योतिषाचार्य उमेश द्विवेदी
सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान
कसार, चारभुजा
जिला राजसमंद

सबक

संसार में जन्म लेने के लिए
मां के गर्भ में 9 महीने रुक सकते हैं,
चलने के लिए 2 वर्ष,
स्कूल में प्रवेश के लिए 3 वर्ष,
मतदान के लिए 18 वर्ष,
नौकरी के लिए 22 वर्ष,
शादी के लिए 25-30 वर्ष,

इस तरह अनेक मौकों के लिए हम इंतजार करते हैं, लेकिन
गाड़ी ओवरटेक करते समय 30 सेकंड भी नहीं रूक सकते ?

फिर एक्सीडेंट होने के बाद जिन्दा रहे, तो एक्सीडेंट निपटाने के लिए
कई घंटे, अस्पताल में कई दिन, महीने या साल निकाल देते हैं।

कुछ सेकंड की गड़बड़ी कितना **भयंकर** परिणाम ला सकती है।
जाने वाले चले जाते है, पीछे वालो का क्या।
इस पर विचार किया, कभी किया नहीं।
फिर हर बार की तरह, नियति को दोष।

इसलिए सही रफ्तार में सही दिशा में वाहन संभल कर चलाएं सुरक्षित
पहुंचे। आपका अपना परिवार आपका घर पर इंतजार कर रहा है।

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

मार्च माह के अंक में गुस्ताखी माफ में दिया गया कार्टून सरकार पर तीखा व सटीक तंज था। वास्तव में नेताओं ने देवास से राजसमंद झील तक पानी लाने का आमजन को सिर्फ झुनझुना ही पकड़ाया। इसके साथ ही नेताओं के बैनर-होर्डिंग पर टंगने के शौक और विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा में चल रही अन्तर्कलह पर दी गई खबर भी सटीक और रोचक थी। परीक्षाओं कको लेकर दिए गए शैक्षिक टिप्स छात्रों के साथ ही अभिभावकों के लिए भी काफी प्रेरणास्पद सिद्ध हुए।

दिनेश पहाड़िया सह संयोजक
दलित आदिवासी एवं घुमंतू अधिकार अभियान

जयवर्द्धन पुस्तक के मार्च माह के अंक में कानून और अधिकार कॉलम में दी गई जानकारी आमजन के लिए कई मायने में खास रही। व्यंग्य-बाण और माटी का लाल कॉलम भी पठनीय व रोचक और नई पीढ़ी को इतिहास से अवगत कराने के लिए प्रेरक सिद्ध हुआ। इसके अलावा राजसमंद की खास खबरें में महीनेभर की खबरों की संक्षिप्त जानकारियां भी युवा, प्रौढ़ व महिलाओं के लिए अपडेट करने वाली रही।

नीदेशसिंह चुंडावत
युवा, कांकरोली

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका में हर वर्ग के पाठक का ख्याल रखा जा रहा है। इसलिए यह पुस्तक छात्र, युवा, महिलाओं से लेकर आम जनमानस के लिए कई मायने में उपयोगी सिद्ध होने लगी है। साहित्य की दृष्टि से कविता, कहानियां भी रोचक और प्रेरणास्पद दी जा रही है। वहीं अध्यात्म का कॉलम भी भावी पीढ़ी के साथ आमजन के लिए प्रेरक है। मेवाड़ी चौपाल का स्थायी कॉलम भी रूढ़ीवादी परंपरा पर चोट करते हुए आधुनिक पीढ़ी को अंधविश्वास से उबारने के लिए प्रेरक है।

धीरज पालीवाल
शाईन कम्प्यूटर, कांकरोली

जयवर्द्धन मासिक पुस्तक में हर वर्ग का ध्यान रखते हुए तैयार की गई है, जो वास्तव में ऑल इन वन है। किशोर, छात्र, युवा, प्रौढ़, महिला से लेकर हर आम एवं खास के लिए आम जरूरतों की चीजों को शामिल किया गया है। तीखी मिर्ची कॉलम में प्रतिमाह जो व्यंग्यात्मक शैली में लिखा जाता है। वास्तव में भौतिक हालात से रूबरू कराने वाला है। राजनीतिक व प्रशासनिक आंतरिक हालात को उजागर करना भी इस पत्रिका की खासियत है।

दिलीप जोशी
युवा नेता कांग्रेस कांकरोली

माड़साब रौ जीव जाणै

‘भादवा’ में वरखा री झड़ी लागी। वाळा–नाळा ने नंद्यां ऊर-पूर चाली। माड़साब तेवार करवा आंपणै गाम आया हा। दूजे दन पाछौ परले गाम भणावा जाणौ हो। वरखा तो ढबवा रौ नाम नी लेवे। गाम तक मोटर जावती ही पण नंदी में पाणी वतौ आवाऊं ढांवा परै उतरणौ पड़्यौ। माड़साब वठै एक भाटा माथे बैठी ग्या ने पाणी उतरवा री वाट जोवा लागा।

घणी दांण तांई बैठा रिया, पण पाणी में घणौ फरक कोनी पड़्यौ। वणां ने होच वियौ- यूं बैठ्यां तो हांझ वैई जाणी है। परबाते तो इस्कूल पूगणौ है, नै अठै रात कठै रैवालां ? पण करै तो कई करै ?

थोड़ी दांण पछै, वणईज गाम रो एक ने रीठ बंद मोट्यार वठै आयौ। माड़साब ने दैखी ने होच्यौ ओ मनख डीळ डोलऊं थांणादार लागे है, के कोई दारू पकड़वा वाळा साब वैई सके अणाऊं हेंद पछाण काढां, कदीक आंपणे काम पड़ सके। मोट्यार माड़साब ने पूछ्यौ- थारै कांई आगले गाम जाणौ है ? वणां कियौ हां, पण नंदी में पाणी घणौ आई रियौ है। घणी दांण सूं अठै बैठो हूं। पाणी उतरै कोनी। मोट्यार बोल्यौ- म्हुं वठैइज जाई रियौ हुं। थां म्हारे खांदे बैठी जावौ, पाणी बारणै काढे दूं। अबै पाणी घणौ, कोनी, म्हुं तो कतरी दांण ऊर-पूर नंदी रै पांणी मऊं गियौ थको हूं। थें तो खांदे बैठौ जणी री वात करो। माड़साब होच्यौ आज आंपणौ भाग ठीक है। ओ भलो मनख मले ग्यौ ने खांदे बैठी ग्या। मोट्यार हिलौळा खाता पाणी में पग जमावतौ चालवा लागौ ने होच्यौ औ थाणांदारईज वेला। वणी पूछ्यौ- थां कई थांणादार हो ? माड़साब बोल्या कोनी। तो दारू रा मेकमा वाळा ? वणां कियौ नी तो थें कूंण पटवारी साब हो ? माड़साब फैजू कियौ के नी, म्हुं पटवारी कोनी। तो ‘एलकार’ वोला ? वणां कियौ म्हुं नी तो थांणादार हुं, नी पटवारी, म्हुं तो थारै गाम में नुंवौ माड़साब हूं। मोट्यार नंदी वचे ग्यौ, नै आ वात हुंणताई ठाम ढबै गियौ, नै बोल्यौ- या वात थां मने पेल्या क्यूं नी वताई ? थारौ मुंडो कई परो भागौ हो ? एक गदेड़ा जतरौ बोझ घणौ मसकल उपाड़े, नै म्हुं पाणी में चाल्यो, कैवताई ने मोट्यार माड़साब ने धबाक देती रा पाणी में डबूका खावा लागा ने गा... करी ने बोल्या- म्हूं डूबे ने परौ मरूंला, म्हारौ हाथ तो पकड़ौ। मोट्यार बोल्यौ के म्हारौ गाम तो पेल्याई माड़साब सूं बौझे मरे रियौ है। एक आवै ने दूजौ जावै। भणावां रौ काम तो नी करै, ने कदी तो मनख गणे, कदी ढांडा गणै ने कदी घर दकाना गणवा परा जावै। आजकाले गरीब मनखा ने गणे रिया हो। वणांने गणे ने टालावर (धनवान) वणाई दो ला ? कदी मेटिंगा में जावौ, ने कदी गंडकड़ा गणवा जावौ। गाम वाळा ने तो कई ठा कोनी पड़े। हां, बोट पड़ता जदी तो पैल्याई जाता पण अबे तो दूजा कामां रौ कई थागई कोनी। नत नुंवा काम ओ कांई ढाण है ? माड़साब कियौ कै म्हूं अबे डूबवा वाळो हूं, मनै पकड़ौ। मोट्यार पाछौ वणां रो हाथ पकड्यौ ने बोल्यौ- पाछा बैठो म्हारे खांदे। वणां ने खांदे बैठाई ने वणी पाछा लाई ने वणीईज भाटा परै पटके दीदा, ने बोल्यौ- अबै पाणी उतरै, ने थें आवता रीजौ, म्हूं तो जाई रियौ हूं। थारै कई आगत कोनी, भैंश्यां कमाड़ कोनी भागे। परौ ग्यौ मोट्यार। माड़साब होच्यौ के बेटी रै बाप चौखी वीताई अणी आज म्हारै लारे। औ नंदी रौ पाणी तो कूण जाणै कणी दांण उतरैला पण अणी मोट्यार म्हारौ पाणी तो सप्पा आज उतारै नांक्यौ। कतराई काम करौ पण टाबरां ने भणायां वना माड़साब री कदर गाम में कोनी वैई सके। माड़साब हांझे गाम पूगा, गाबा- छीतरा हुकाया ने केवा लागा मोट्यार रौ केणौ हांचौ है। म्हारोई जीव जाणै, पण पट्टौ किने वतावां ?

जवानसिंह सिसोदिया
राजस्थानी रचनाकार
लालबाग, नाथद्वारा

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान

जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

टीका

आठ बज गए हैं। स्कूल नहीं जाना है क्या? गहरी नींद में गूंजती सी मां की आवाज आ रही थी। नींद में भी बड़ी सूझबूझ से खिड़की में से आ रही रोशनी से नींद में खलल न पड़े, इस हेतु चादर को चेहरे पर ढांपने का एक बाल सुलभ मेरा प्रयास जारी था। पापा के सहानुभूति भरे स्वर कानों में मिश्री घोल रहे थे- ''बच्चा है, दिनभर उछलकूद करता रहता है, 10 मिनट और सोने दो''। पापा की इस टिप्पणी पर पुरस्कार स्वरूप उनके गाल पर पप्पी देने का बरबस मन कर रहा था, किन्तु इससे 10 मिनट की बोनस निद्रा से वंचित होना पड़ता एवं साथ ही नींद का बहाना बनाने का राज खुलने का भय भी था। पापा की टिप्पणी पर मां की क्रोधाग्नि धधक उठी।

केवल बातें बनाना ही आता है, ऐसा है तो उसे नहला धुलाकर आप ही तैयार कर देना, टिफिन भी कल से आप ही बनाना। बच्चों को माथे चढाना इनसे सीखो। इतने में नाक में सब्जी के बगार जलने की गंध आने लगी, छींक रोकने का प्रयास किया, किन्तु निरर्थक रहा। शुरू हुई तो रूकने का नाम नहीं ले रही थी। उठना मजबूरी थी। दिनचर्या की नियमित श्रृंखला में पापा मम्मी को अभिवादन किया। अभिवादन के साथ ही मां का उफान कुछ कम हुआ। यह रोजमर्रा की बात थी। छोटे छोटे हाथों से मेरे अभिवादन की मुद्रा उफनते दूध में पानी का काम करती थी। मां के डर से पापा ने मुझे झटपट तैयार करने में नौसिखियाना सहयोग किया। कान में साबुन रह गया तो उसका ठीकरा भी पापा पर ही फूटा। पापा का मेरी पैरवी करना और बदले में मां के ताने किसी धारावाहिक की टीआरपी बढाने के आयाम के समतुल्य थे।

तब तक रोशन आ गया था, मेरा सहपाठी था वह। जूते पहन कर बस्ता लटकाकर उसके साथ हो लिया। प्राइमरी स्कूल था, जिसमें हम दोनों तीसरी में पढते थे। प्रार्थना शुरू होने वाली थी। लाईने बन रही थी। कद में सबसे छोटा होने से लाइन में आगे ही खड़ा होना था। प्रार्थना सम्पन्न हुई। हेड़माड़साब खड़े हुए- ''बच्चों! चेचक का टीका लगाने वाले गांव में आए हैं। अभी पास के स्कूल में गए हैं, रेसेस के बाद अपने स्कूल में आएंगे।'' मैं मूर्तिवत् हो गया। मकान मालिक के लड़के राजू भैया को देखा था, उसके बाजू में बड़ा सा निशान देखकर पूछने पर उसने बताया था, ''टीके का निशान है।'' भय मिश्रित जिज्ञासा बढी, ''इंजेक्शन की सुई लगाते हैं, फिर घाव बनता है, पकता है, बुखार भी आता है, लगभग एक हफ्ते तक पीड़ा रहती है।'' विचारों में राजू भैया के प्रति सहानुभूति उमड़ रही थी।

पीछे खड़े लड़कों ने आगे की ओर ठेला, कतार कक्षा की ओर बढ रही थी। कक्षा में रोशन मेरे पास ही बैठता था। कक्षा में ही सहमति पर मौन हस्ताक्षर हो गए कि रेसेस होते ही स्कूल से भागना ही है। वरना आज टीका लगकर रहेगा। राजू भैया को हुई पीड़ा की सिहरन मैं अपने अन्दर स्पष्ट रूप से महसूस कर रहा था। आखिर रेसेस की घड़ी आ गयी। हम दोनों ने दृढ निश्चय कर रखा था, सबसे छिपते छिपाते स्कूल से किसी तरह से निकल गए। स्कूल से कुछ दूर जाकर राहत की सांस ली।

किन्तु अब क्या करें ? घर चलें रोशन ने कहा, मैंने कहा – मां को क्या बताएंगे जल्दी आने का कारण? एक काम करते हैं, स्कूल की छुट्टी होने तक इन्तजार करना होगा। किसी परिचित ने देख लिया तो खैर नहीं। दोनों एकान्तवास पर सहमत हो गए। पांच पैसे के बेर लिए, दोनों की जेबें भरने के बाद बचे हुए बेर हाथ में लेने पड़े। कभी कभार कुछ दूरी पर स्थित विलायती इमली (कींकर) खाने जाया करते थे, इस विषम घड़ी में उसी की स्मृति हो आई, पहुंच गए वहां। पास की झुग्गी बस्ती के कुछ बच्चे पूर्व से ही वहां मौजूद थे, कुछ बच्चे पेड़ पर चढे हुए थे, कुछ बच्चे उनके द्वारा पेड़ से गिराए गए फल बीन रहे थे। उनका वर्चस्व वहां साफ नजर आ रहा था। जमीन पर पड़े हुए कुछ फल लेने के प्रयास में उनके आधिकारिकता पूर्ण शब्द– वाणों का सामना करना पड़ा।

इसलिए उस प्रकृति सुलभ सौगात को भी हम याचक की भांति ही अवलोकन कर पा रहे थे। हमें अपने पास मौजूद बेरों के रसास्वादन से ही अपने स्वाभिमान का प्रदर्शन करना समीचीन लगा, तो उस दल के कुछ बच्चे बेरों के आकर्षण से अछूते नहीं रह पाए और वस्तु विनिमय को स्वीकार कर लिया। हमें अपने लाए बेरों पर गुमान होने लगा।

इस सबके बीच वक्त ने उड़ान भरी। पता ही नहीं चला। प्रात:कालीन विद्यालय खुलने की घंटिका वादन बाल मन पर हथौड़े की चोट के समान लगता है और विद्यालय समय खत्म होने के घंटिका वादन की तुलना आजादी के बिगुल सी लगती है। झुग्गी बस्ती के उस बालवृन्द के भाग्य से हम दोनों ईर्ष्या कर रहे थे। उन्हें विद्यालय की घण्टी का डर नहीं , किसी टीका लगाने वालों का डर नहीं।

खैर! दूर हवा में विद्यालय की घंटी का स्वर सुनायी दिया, हमारी एकान्तवास की तन्द्रा भंग हुई। अपराध बोध से ग्रस्त थे, सहज होने का प्रयास किया, बस्ता संभाला। एक बहुत बड़ी बला से हमने अपने आपको बचा लिया था। घर की ओर कदम बढ चले। ऐसा लग रहा था कि सभी हमें ही घूर रहे थे। अभिनय सफल रहा। घर में किसी को शक नहीं हुआ। राजू भैया से मिलना नहीं भूला। उसकी बाजू के टीके के निशान को देखने का लोभ संवरण न कर सका। पुन: अन्दर तक सिहर उठा। किन्तु भगवान का शुक्र मनाते हुए राहत की सांस ली। आज मैं विद्यालय के सभी बच्चों से अपने आपको भाग्यशाली समझ रहा था।

अगले दिन सवेरे नियमित अलसाए हुए क्रम में मम्मी पापा की नोक झोंक के बीच तैयार हुआ। रोशन द्वार पर खड़ा था। विद्यालय की ओर प्रस्थान किया। प्रार्थना की लाईन लग रही थी। स्टेज पर दो अजनबी चेहरे नजर आए। पीटीआई जी सर बता रहे थे जो कल रेसेस के बाद नहीं थे, वे अलग लाईन में खड़े हो जाएं, उन्हें सजा मिलेगी, प्रार्थना के बाद कोई कक्षा में नहीं जाएगा। कल टीका लगाने वाले किसी कारण से नहीं आ सके थे। प्रार्थना में मौजूद उन दो अपरिचित चेहरों का परिचय टीका लगाने वालों के रूप में दिया। उनके सम्मान में तालिया बजी। मैं जड़ हो गया था, दोनों हाथ ताली के लिए उठे, लेकिन आपस में मिल नहीं पाए।

चन्द्रशेखर श्रीमाली 'शेखर'
हेमबसन्त, भिक्षु विहार,
सौ फीट रोड राजसमंद

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..

अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी मूलभुत समस्या, नवाचार, आयोजन, मुद्दे, लेख, चुटकले, कहानी, कविता हमें भेजे

E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

अगले जनम मोहे 'टेपा' ही कीजो

आजकल जुमलों की दुनिया में एक जुमला खूब सुनाई दे रहा है- 'अगले जनम मोहे बिटिया ही कीजो'। अब ऊपर वाले ने इस जनम में तो मुझे न तो बिटिया बनाया, न ही बिटिया का बाप। बना डाला निरा खालिस मर्द। हालांकि मर्दानगी से मुझे कोई शिकायत नहीं, लेकिन इस जुमले के बाद से मेरे सामने यह प्रश्न मुंह, हाथ, पांव और न जाने क्या- क्या बाएं खड़ा है कि 'मैं ऊपर वाले से अगले जनम में क्या बनने की डिमांड करूं?'

मुझे लगता है कि मुझे वही बनना चाहिए, जो इस जनम में हूं। तो आज सार्वजनिकरूप से घोषणा करता हूं कि - हे ईश्वर! जिस तरह इस बार मुझे मनुष्य की विशिष्ट प्रजाति 'टेपा' सम्प्रदाय में भेजा है, वैसा ही अगले जनम में भी टेपा ही बनाना। 'टेपा' मनुष्य में भी आदमियों की एक दुर्लभ नस्ल है। इंसान जैसे 'बोर्न जीनियस' या 'बोर्न पप्पू' होता है।

वैसे ही 'बोर्न टेपा' भी होता है। अपन उसी नस्ल के है।

दरअसल, इस छल-छद्म से भरी दुनिया में इकलौता 'टेपा' ही ऐसा जीव होता है, जिसे छल कपट छू तक नहीं जाते। हालांकि इसका मतलब ये नहीं कि टेपा मूर्ख होता है। टेपा असल में बेहद भोला प्राणी होता है। कहने को तो यह प्रजाति मालवा क्षेत्र में ही पैदा होती है, लेकिन अब इसका बिजवारा 'बीज' पूरे भारत में पाया जाने लगा है और कई टेपो ने तो यहां से विदेशों में बसकर वहां के लोगों को भी 'टेपा सम्प्रदाय' का बना दिया है। 'टेपा' इतना भोला होता है कि उसे घर आने का कह दो तो सचमुच आ ही जाता है। बैठने का बोलो तो लेट जाता है। चाय का पूछो तो 'हां' कह देता है। टेपा सम्प्रदाय का हर सदस्य पेट, मनुहार और कान का बहुत ही कच्चा होता है। असली टेपा को कोई राज की बात अगर यह कहकर बता दो कि 'तुम्हें बता रहा हूं, किसी और को मत बताना, तो वह बात रातोंरात हजारों लोगों को वाट्सएप हो जाती है। टेपा बतरसी और परनिंदा- प्रेमी भी होता है। निंदा होती दिखी नहीं कि टेपा झट से वहां घुस जाता है और 'बतरस' में 'निंदारस' के घोल से पकौड़े तलने बैठ जाता है।

टेपा दोनों हाथों में लड्डू रखना पसंद करता है। हाथ अगर दो से ज्यादा होते तो वह उनमें भी लड्डू ही रखता। किसी से बुराई नहीं लेता। राम की भी जय और रावण की भी। मोदी की भी जय और केजरी की भी। हालांकि इसी चक्कर में वह दोनों तरफ से कुटेले भी खा लेता है। टेपा प्रायः मीठा ही बोलता है और जरूरत पड़े तो गधे को भी काकाजी कह देता है। टेपा रसिया भी होता है। डूंडेपन की हद तक भोला बनकर वह औरतों के बीच भी बतरस के आनंद लूट आता है। अब इतनी सारी क्वालिटी एक टेपे में हो, तो अपन तो यही कहेंगे 'हे ब्रह्मा, अगले जनम मोहे टेपा ही कीजो'।

मुकेश जोशी
उज्जैन (मध्यप्रदेश)

Student Helpline.... उम्मीदों को पंख लगाएं...... बेहतरीन I.T. एज्युकेशन पाएं

CAREER GUIDANCE यदि आप हैं बेरोजगार, तो हम दिलाएंगे रोजगार निजी क्षेत्र में नौकरियां पाने हेतु सम्पर्क करें।

राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RKCL IT shapes future (Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

New RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्पयूटर कोर्स

Coaching Classes : 9th to 12th Class Coaching in English Medium for All Subject (CBSE & RBSE)

PGDCA, BCA, MCA, B.Sc., M.Sc., BA., MA., B.Com., MSW, MBA etc.

SDDI INSTITUTE (Success Dream Developer International Institute)

1st Floor, OBC Bank, Sabari Maa Market, Rajsamand (Raj.) Contact : 02952-221427 Mob. 8003727710, 7023365111

Angel Computer Sales and Service

(We Understand your digital world)

Computer service at your Doorstep Laptop Desktop, Installation, Formatting, Upgrading, Virus Cleaning, Troubleshooting, Restarting, Hanging No Display.

Printer repair & Cartridge Refill

Also all Type of CCTV camera installation

Mukharji chouraya kankroli, Call: 7665038795

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर

शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल

राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर

मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी

हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर

राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी

इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर

साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)

अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला

भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

श्रुति म्युजिकल इंस्टीट्यूट
राजसमन्द
नियमित प्रशिक्षण
शास्त्री व फिल्मी गीत
तबला, ढ़ोलक व बांसूरी
हारमोनियम केसियो
स्पेनिस गीटार, ट्रेक्स
वेस्टर्न फ्युजन
चयनित छात्र-छात्राओं को ETV एवं All India Radio पर प्रदर्शन कर अवसर
MUSIC
:: प्रशिक्षित ::
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार
पं. जमना प्रसाद पंवार, कुणाल पंवार
गुरुकुल
पं. जमना प्रसाद पंवार
शिव कॉलोनी कलेक्ट्री रोड राजसमन्द,
मो. 95214-55660, 99293-97986

क्या आपने कभी सोचा हैं?

आपके पेम्पलेट को कितने लोग पढ़ते हैं?

कितने सड़क पर बिखरे रहते हैं?

पेम्पलेट

छपवाने की अब जरूरत नहीं।

क्योंकि पेम्पलेट के खर्च में ही

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका

में अपने प्रतिष्ठान का

आप विज्ञापन लगा सकते हैं

सम्पर्क करें 9414239648

जयवर्द्धन

राजसमंद की एकमात्र

लोकप्रिय मासिक पत्रिका

To